

मार्च 2026

दादावाणी

Retail Price ₹ 20



वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

थाणे त्रिमंदिर तीर्थक्षेत्र



वर्ष : 21 अंक : 5

अखंड क्रमांक : 245

मार्च 2026

पृष्ठ - 32

दादावाणी

भवबंधन से छूटने, करो सुमेल

Editor : Dimple Mehta

© 2026

Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Multiprint

Opp. H B Kapadiya New High
School, At-Chhatral, Tal: Kalol,
Dist. Gandhinagar - 382729

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

5 साल

भारत : 1000 रुपये

वार्षिक

भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) की भावना थी कि लोगों को व्यवहार धर्म भी इतना उच्च मिलना चाहिए कि जिससे जीवन जीने की कला संपूर्ण आ जाएँ ताकि जीवन क्लेश रहित जिया जा सके। फैमिली व्यवहार में होती क्लेश-मतभेद की ये उलझन सिर्फ आपको ही हैं ऐसा नहीं है, जगत् के सभी परिवारों में हैं। ये व्यवहारिक खुलासे करने के लिए तो वकील पैसे लेते हैं! लेकिन यहाँ तो अमूल्य खुलासे प्राप्त हो सके ऐसा है, जिसका मूल्य ही नहीं है। यहाँ आपके सभी खुलासे करके जाना।

फैमिली में कभी-कभी मतभेद तो हो जाते हैं लेकिन मतभेद से क्लेश उत्पन्न होते हैं, उसका हर्ज है। पति-पत्नी किसे कहते हैं? संसार निभाएँ उसे। संसार तोड़ दें उन्हें पति-पत्नी कैसे कहेंगे? यह सब बैर से बंधा हुआ है, प्रेम से नहीं। प्रेम तो मतभेद होने ही नहीं देता। मतभेद का कारण अहंकार है। मतभेद टालना नहीं आया तो उसे बुद्धि ही नहीं कहेंगे न!

प्रस्तुत अंक में, पति-पत्नी के बीच के आंतरिक मतभेद को बुद्धि और समझ से खत्म किया जा सकता है उसके लिए चाबियाँ ज्ञानी पुरुष देते हैं, जैसे कि मतभेद टालने के लिए अपनी बात को पकड़कर नहीं रखें, दोनों के डिपार्टमेंट अलग, अन्डरहैन्ड को रक्षण प्रदान करें, मैं और तू से होती खींचतान छोड़ें, ‘मैं-मेरा’ मत को ही निकाल दें, आपका मत ही मेरा मत, एडजस्ट एवरीव्हेर, पति-पत्नी एक-दूसरे के पूरक काउन्टर वेट, समानता का दाँव दें, प्रकृति को पहचानकर काउन्टरपुली लगाएँ, टकराव टालें और टकराव हो जाएँ तब नॉर्मैलिटी से समभाव से निकाल करके, पति-पत्नी घर में मित्र की तरह रहें।

आपका जिनके साथ पूर्वजन्म का ऋणानुबंध हो और उनके साथ रहना पसंद न हो फिर भी अनिवार्य रूप से साथ में रहना ही पड़ता हो, तो क्या करना चाहिए कि बाहर का व्यवहार उसके साथ रखें जरूर लेकिन अंदर उसके नाम के प्रतिक्रमण करने चाहिए। अब, पति-पत्नी को मतभेद के समय उकताकर भाग नहीं जाना है, एक-दूसरे का समभाव से निकाल करके मेल बैठाना है। निकाल अर्थात् जहाँ द्वेषभाव होता हो वहाँ सामने वाले के आत्मा के पास आपने जो भूल की है उसे स्वीकार करके, उसके लिए प्रतिक्रमण करना। प्रतिक्रमण करने से सामने वाले के प्रति द्वेषभाव नहीं होता।

संपूज्य दादाश्री के पास अनेक पति-पत्नी ने अपने दुःखी संसार की समस्याएँ कभी निजी तौर पर तो कभी मुक्त मन से जाहिर में व्यक्त की थी। पति-पत्नी के बीच की अनेक जटिल समस्याओं को हल करने वाली दादाश्री की हृदयगम्य और हमेशा के लिए समाधान देती यह अनुभव वाणी की व्यवहार बोधकला है, जो हर एक पति-पत्नी का मार्गदर्शक बनकर घर-संसार में सही समझ के साथ शांति स्थापित करें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

भवबंधन से छूटने, करो सुमेल

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

मतभेद में से क्लेश वहाँ हर्ज़

कभी घर में क्लेश होता है? आपको कैसा लगता है, घर में क्लेश होता है वह अच्छा लगता है?

प्रश्नकर्ता : कलह बिना तो नहीं चलती दुनिया।

दादाश्री : तब तो वहाँ भगवान रहेंगे ही नहीं। जहाँ क्लेश है वहाँ भगवान नहीं रहते। मजेदार खाना, सोने के गहने पहनना और ऊपर से कलह करना। यानी जीवन जीना नहीं आता, उसके कारण यह कलह है। कलह होना ही नहीं चाहिए। क्लेश क्यों होना चाहिए मनुष्य के घर? कलह किसलिए होना चाहिए? और क्लेश होने से अच्छा लगेगा? क्लेश हो तो आपको कितने महिनों तक अच्छा लगेगा?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल नहीं।

दादाश्री : सारा दिन तोड़-जोड़, तोड़-जोड़! दुःख, दुःख और दुःख! परेशानी, परेशानी और परेशानी। अरे, ऐसा जीवन कैसे जीया जाए? ऐसा मनुष्य को शोभा देता है? ऐसे घर वालों के साथ, बाहर वालों के साथ, वाइफ के साथ टकराए, उसे क्लेश कहते हैं। मन टकराए और फिर थोड़ी देर अलग रहे, उसे क्लेश कहते हैं। दो-तीन घंटे टकराए और फिर तुरंत एक हो जाए तो हर्ज़ नहीं लेकिन टकराकर दूर रहे, तो वह क्लेश कहलाता है। बारह घंटे दूर रहे तो सारी रात क्लेश में कटती है।

घर में क्लेश रहता हो न, तब तक संसार काम का ही नहीं है। क्लेश जाए तो धर्म में आगे बढ़ा जा सकता है और आत्मज्ञान तो अभी बहुत आगे की, दूर की बात है। पहले क्लेश जाना ही चाहिए। किसी के घर से क्लेश नहीं गया। घर में क्लेश नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : नहीं होना चाहिए, वह सब बात सही हैं, लेकिन होता है उसका क्या?

दादाश्री : इतनी नासमझी निकाल दोगे तो क्लेश निकल जाए, ऐसा है। इस नासमझी से क्लेश उत्पन्न हुआ है। नासमझी से ये सारे दुःख हैं, बाकी दुःख बिल्कुल भी नहीं है। सारे दुःख इन्वाइट किए हुए हैं।

आपका कभी मतभेद होता है?

प्रश्नकर्ता : मतभेद तो, घर में रहेंगे। हर किसी के विचार समान नहीं होते न!

दादाश्री : हाँ, ऐसे मतभेद का हर्ज़ नहीं है, लेकिन जिस मतभेद से क्लेश उत्पन्न होते हैं, उसका हर्ज़ है। यानी आप जिसे मतभेद कहते हैं न, ऐसा मतभेद तो स्वाभाविक रूप से, होता है। ये कहेंगे, 'गलत हुआ'। तब वे कहेंगे, 'नहीं, गलत नहीं है!' लेकिन उसमें से क्लेश नहीं होना चाहिए। किसी भी रास्ते से क्लेश को बाहर निकाल देना। मतभेद को फिर सुलझा देना। यदि मतभेद हो गया हो, तो फिर आपको ऐसा कोई रास्ता निकालकर जल्दी से उसे सुलझा देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह से थोड़ा बताइए। थोड़ा और विस्तार से क्लिअर समझाइए न कि मतभेद हुआ ऐसा कब कहा जाता है? फिर किस तरह हमें उसे टालना चाहिए।

दादाश्री : आप जिनके साथ रहते हो उनकी प्रकृति नहीं पहचाननी चाहिए?

प्रश्नकर्ता : वह पहचाननी नहीं आती।

दादाश्री : अरे, कैसे पहचाननी नहीं आती? आप प्रयत्न करेंगे तो क्या पहचान नहीं पाएँगे?

प्रश्नकर्ता : दस साल हो गए लेकिन अभी तक पहचान नहीं पाया।

दादाश्री : ऐसा! यह ज्ञान लेने के बाद पहचानने का प्रयत्न करना, पहचान पाओगे। वह तो जैसे-जैसे दृष्टि खुलेगी वैसे-वैसे पहचान पाओगे।

एक अपार्टमेंट में, दो डिपार्टमेंट अलग

घर में मतभेद न रहे इतना कर दो। खाओ, पीओ, मजे करो लेकिन क्लेश नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन घर में दो व्यक्ति हैं, वाइफ और मैं, तो मतभेद तो पड़ेंगे ही न! दो व्यू पोइन्ट हो जाते हैं न!

दादाश्री : कुर्सी के साथ होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन कपड़े खरीदना हो तो वाइफ कहती है, यह 'खरीदो' और मैं कहता हूँ, यह खरीदो। यह सिम्पल (सादा) उदाहरण बताया, इसे मतभेद नहीं कहेंगे?

दादाश्री : ओहोहोहो! वह तो सारी आपकी ही भूल हैं। ऐसी जो कुछ बाबतें हो न, तो आप, जैसे ये प्रधान होते हैं न, वे सभी डिपार्टमेंट

(विभाग) बाँट लेते हैं कि यह होम (घर का) डिपार्टमेंट, यह फॉरेन (बाहर का) डिपार्टमेंट। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : स्त्री का डिपार्टमेंट कौन-सा? किस-किसमें पुरुषों को हाथ नहीं डालना चाहिए?

दादाश्री : ऐसा है, खाने का क्या करना, घर कैसे चलाना, वह सब स्त्री का डिपार्टमेंट है। गेहूँ कहाँ से लाती है, कहाँ से नहीं लाती आपको वह जानने की क्या ज़रूरत है? वह यदि आप से कहती हों कि गेहूँ लाने में मुझे अड़चन पड़ रही है तो वह बात अलग है। परंतु वह आपको कहती न हों, राशन बताती नहीं हों, तो आपको उस डिपार्टमेंट में हाथ डालने की ज़रूरत ही क्या है? 'आज दूधपाक बनाना, आज जलेबी बनाना', आपको वह भी कहने की ज़रूरत क्या है? टाइम आएगा तब वह रखेगी। उनका डिपार्टमेंट, वह उनका स्वतंत्र है! कभी बहुत इच्छा हुई हो तो कहना कि, 'आज लड्डू बनाना।' कहने के लिए मना नहीं करता, परंतु दूसरा इधर-उधर का, बेकार शोर मचाएँ कि 'कढ़ी खारी हो गई, खारी हो गई', यह सब नासमझी है।

यह रेलवे लाइन चलती है, उसमें कितनी सारी कार्यवाही होती है! कितनी जगहों से टिप्पणी आती हैं, खबरें आती हैं, उनका पूरा डिपार्टमेंट ही अलग। अब उसमें भी खामी तो आती ही है न? वैसे ही वाइफ (पत्नी) के डिपार्टमेंट में कभी खामी भी आ जाए। अब आप यदि उनकी खामी निकालने जाएँ तो फिर वे आपकी खामी निकालेंगी, 'आप ऐसा नहीं करते, वैसा नहीं करते। ऐसा खत आया और वैसा किया आपने।' यानी कि वह बैर वसूलती है। मैं आपकी कमी निकालूँ तो आप भी मेरी कमी निकालने के लिए बेताब रहते हैं!

अतः खरा मनुष्य तो घर की बाबतों में हाथ ही न डाले, वह पुरुष कहलाता है! वर्ना स्त्री जैसा होता है! कुछ लोग तो घर में जाकर मसाले के डिब्बे में देखते हैं कि 'दो महीने पहले लाए थे, तो इतनी ही देर में खत्म हो गए!' अरे, मसाले देखता है तो कब अंत आएगा! वह जिसका डिपार्टमेन्ट हो उसे चिंता नहीं होती? क्योंकि चीजें तो खर्च होती रहती हैं और खरीदी भी जाती हैं। लेकिन यह तो बिना काम के ज्यादा अक्लमंद बनने जाता है!

प्रश्नकर्ता : हमें उनके डिपार्टमेन्ट में दखल नहीं देना है।

दादाश्री : हाँ, दखल नहीं देना है और फिर बच्चे के सिर पर हाथ फेरना, बातचीत करनी हैं। फिर आनंद हो ऐसी बातें करनी हैं लेकिन अन्य कोई झंझट नहीं। कुछ तो आयोजन होना चाहिए आपका। डिपार्टमेन्ट तय नहीं हो सकता कि इतना डिपार्टमेन्ट आपका है?

प्रश्नकर्ता : अब मान लो कि पत्नी उनके डिपार्टमेन्ट का कहे कि आप इतना बच्चे का करो, बच्चे को स्कूल में ले जाओ, तो फिर उस समय क्या करना है? डिपार्टमेन्ट पकड़कर बैठे रहना है?

दादाश्री : आपको देख लेना है उस समय।

प्रश्नकर्ता : यानी वैसा, गधे की पूँछ की तरह इसे पकड़कर नहीं रखना है कि यह मेरा डिपार्टमेन्ट नहीं है, मैं नहीं करूँगा!

दादाश्री : नहीं, ऐसा डिपार्टमेन्ट कहा जाता होगा? उनकी अपने डिपार्टमेन्ट में कोई शक्ति (परेशानी हो) न हो और वह आपसे कहे तो यह आपका फर्ज है। अरे, बाहर वाला कोई कहने

आया हो तो भी हम करते हैं, नहीं करते? कोई आपसे विनती करे तो आपको वह करना ही चाहिए। उस समय आपको ऐसा नहीं कहना है कि यह तेरा डिपार्टमेन्ट, यहाँ मेरे पास क्यों ले आयी?

प्रश्नकर्ता : यानी अब घर में प्रधान जैसा तो होना ही चाहिए न? उनकी मिनिस्ट्री में कुछ बिगड़ रहा हो, खराब हो रहा हो, तो हमें उन्हें कहना तो चाहिए न? वहाँ फिर मतभेद नहीं होगा?

दादाश्री : आपको क्यों कहना है? वे उसके प्रधान, आप इसके प्रधान। आप कोई प्रेसिडन्ट नहीं हो दोनों के!

प्रश्नकर्ता : घर के व्यवहार में कुछ बिगड़ रहा हो तो कहने का अपना फर्ज है या नहीं?

दादाश्री : उसके लिए तो धीरे से बात करनी हैं।

प्रश्नकर्ता : कुछ समझाकर तो कहना चाहिए न, इस तरह से नहीं, इस तरह से करना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, समझाकर सब कुछ कहना चाहिए। समझाने के बावजूद नहीं माने तो उनकी मर्जी। आपको उन्हें कहने का अधिकार है।

प्रश्नकर्ता : परंतु क्रोध नहीं करना है?

दादाश्री : वह क्रोध तो आपकी निर्बलता है। उससे तो वे भी समझ जाएँगे कि ये चिढ़ते रहते हैं। तब क्या उसमें आपकी आबरू बढ़ जाएगी?

प्रश्नकर्ता : तो किसी को कह दिया जाए वह निंदा कही जाएगी क्या?

दादाश्री : ऐसा किसी से नहीं कह सकते।

ऐसा बाहर किसी से कहा जाता होगा? अपने राज्य का बाहर किसी से कहा जाता होगा? नहीं, वह तो सीक्रिसि (गोपनीयता) होनी चाहिए। अपना होम डिपार्टमेन्ट, फ़ारैन डिपार्टमेन्ट वह सीक्रिसि होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इसके लिए कोई रास्ता मिले, उपाय मिले इस हेतु से अपने फ़्रेन्डस (मित्र) से ऐसी बात करें तो? फ़्रेन्ड से ऐसी बात करें कि भाई, मेरा पति ऐसे चिढ़ता रहता है तो क्या, इस तरह से बात कर सकते हैं?

दादाश्री : नहीं कहना चाहिए, ऐसा नहीं कहना चाहिए। ऐसा अभी तक कहा हो तो वह अलग बात है लेकिन अब आगे यदि इस तरह से व्यवहार करना हो, तो कहने की ज़रूरत नहीं रहती। अब झगड़ा रहेगा ही नहीं न! क्लेश नहीं हो ऐसा करना।

‘मार’ का फिर लेती है बदला

प्रश्नकर्ता : दादा, मेरा मिजाज़ छटक जाता है, तब कितनी ही बार मेरा हाथ पत्नी पर उठ जाता है।

दादाश्री : स्त्री को कभी भी मारना नहीं चाहिए। जब तक आपका शरीर मज़बूत होगा, तब तक वह चुप रहेगी, फिर वह आप पर चढ़ बैठेगी। स्त्री को और मन को मारना ये तो संसार में भटकने के दो साधन हैं, इन दोनों को मारना नहीं चाहिए। उनसे तो समझाकर काम लेना पड़ता है। स्त्री को मारने जैसा नहीं है। मारने से तो उल्टे तुम्हें ही नुकसानदायक, अंतरायरूप हो जाते हैं।

आश्रित किसे कहा जाता है? खूँटे से बंधी गाय हो, उसे मारोगे तो वह कहाँ जाएगी? घर

के लोग खूँटे से बाँधे हुए जैसे हैं, उन्हें मारोगे तो आप ‘नालायक’ कहलाओगे। उन्हें छोड़ दे और फिर मार, तो वे तुझे मारेंगे या फिर भाग जाएँगे। बाँधे हुए को मारना, वह शूरवीर का काम कैसे कहलाएगा? वह तो कायरों का काम कहलाएगा। घर के मनुष्य को तो तनिक भी दुःख दिया ही नहीं जाना चाहिए। जिनमें समझ न हो, वे घर वालों को दुःख देते हैं।

अन्डरहैन्ड का करो रक्षण

प्रश्नकर्ता : मेरी पत्नी के साथ मेरी बिल्कुल नहीं बनती। चाहे जितनी निर्दोष बात करूँ, मेरा सच हो फिर भी वह उल्टा समझती है। बाहर का जीवनसंघर्ष चलता है, लेकिन यह व्यक्तिसंघर्ष क्या होगा?

दादाश्री : जो अपने संरक्षण में हों, उसका भक्षण कैसे किया जा सकता है? जो खुद के हाथ के नीचे आया हो उसका रक्षण करना, वही सब से बड़ा ध्येय होना चाहिए। उससे गुनाह हुआ हो तो भी उसका रक्षण करना चाहिए। अभी यह पुलिस वाला डाँटे तो ‘साहब, साहब’ कहेगा और घर पर वाइफ सच्ची बात कहती हो, तब उसे सहन नहीं होता और उसे डाँटता है, ‘मेरे चाय के कप में चींटी कहाँ से आई?’ ऐसा करके घर वालों को डराता है। उसके बदले तो शांति से चींटी निकाल ले न! घर वालों को डराता है और पुलिस वाले के सामने काँपता है! अब यह घोर अन्याय कहलाता है। आपको यह शोभा नहीं देता। स्त्री तो खुद की भागीदार कहलाती है। भागीदार के साथ क्लेश? यह तो क्लेश होता हो वहाँ कोई रास्ता निकालना पड़ता है, समझाना पड़ता है। घर में रहना है तो क्लेश किसलिए?

आम का रस खाते हो, उसका हर्ज़ नहीं

है। आप रस खाओ, घी खाओ, रोटी खाओ, परंतु आपको रस परोसते समय पत्नी का हाथ थोड़ा इधर-उधर हुआ और रस थोड़ा बाहर गिर गया, तब आप कहें कि, 'तुम बेवकूफ हो', तो बिगड़ जाएगा! आपको ऐसा अधिकार ही नहीं है। आप 'बेवकूफ हो' कहोगे तो पत्नी बेचारी क्या करेगी? फिर उससे बोला नहीं जाएगा, क्योंकि वह तो दबी हुई होती है। वर्ना पत्नी बहुत तेज़ होगी न, तो वह ऐसा कहेगी कि, आप तो फिर अक्ल के बोरे हो! उस समय आपकी क्या आबरू रहेगी? इसलिए आपको किसी को 'बेवकूफ हो', ऐसा कुछ भी नहीं कहना चाहिए। वह पत्नी को ही डाँटता है। अरे, पत्नी आपको डाँटती है क्या?

प्रश्नकर्ता : डाँटने के लिए यह एक ही जगह है, और कहीं तो कहाँ, कुछ बोल सकता है?

दादाश्री : दूसरी जगह तो मारते हैं सभी। फिर यहाँ वाइफ से क्या कहता है? 'तुम अपने मन में क्या समझती हो! तुम्हें अपने घर (मायके) भेज दूँगा?' कहता है। फिर उसे परेशान करता है। किसी जीव को दुःख नहीं होना चाहिए, किसी को भय नहीं लगना चाहिए। अभी तो घर में वाइफ आपके जाने से पहले डरती है! उसे डराकर आपको क्या सुख मिलेगा?

दोनों को मिलजुलकर रहना है

यह तो भान ही नहीं है! खाते हैं, पीते हैं, उसका भी भान नहीं है। आपको यह भान बढ़ाने की ज़रूरत है। यह तो सारा भान अहंकार में ही पैठ गया है। 'मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ', ऐसा नहीं, 'मुझे अभी बहुत कुछ जानना बाकी है, ऐसा समझ में आना चाहिए। ज्ञान के लिए (दिमाग) खुला रखना चाहिए। घड़े पर ढक्कन ढँक देंगे

तो फिर कौन पानी डालेगा? आपको यह बात पसंद आई? आपको कौन सी बात पसंद आई, बताओ?

प्रश्नकर्ता : इस तरह घड़े पर ढक्कन नहीं ढँकना चाहिए, वह बात पसंद आई।

दादाश्री : महिलाओं को भी और पुरुषों को भी क्लेश नहीं करना चाहिए, दोनों को एक दिन समझौता कर लेना चाहिए, कि ये दादाजी कहते हैं, तो हम नए सिरे से कॉन्ट्रैक्ट कर लेते हैं। कहीं भी झंझट नहीं। वे गुस्सा हो जाएँ तो आपको शांत हो जाना है और बैठे रहना है और फिर गुस्सा शांत हो जाए उस समय चाय लेकर आना है।

प्रश्नकर्ता : परंतु दादा, कॉन्ट्रैक्ट किया हो और बैठे रहना है फिर भी नहीं बैठते उसका क्या करें? शांत नहीं रह पाते और झगड़ा कर लेते हैं तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : झगड़ा करते हो तो भी आपको भीतर कहना है कि ये दो पुतले झगड़ रहे हैं। आपको यह ज्ञान है अतः दो पुतले झगड़ रहे हैं, वह देखो आप, उनकी फिल्म देख लो।

नाॅर्मेलिटी से समभाव से निकाल

प्रश्नकर्ता : सामने वाले का समाधान करने का हम प्रयत्न करें, लेकिन उसमें परिणाम अलग ही आने वाला है, ऐसा हमें पता हो तो उसका क्या करना चाहिए?

दादाश्री : परिणाम कुछ भी आए, आपको तो 'सामने वाले का समाधान करना है' इतना निश्चित रखना है। 'समभाव से निकाल' करने का निश्चित करो, फिर निकाल हो या न हो वह पहले से नहीं देखना है। और निकाल होगा! आज नहीं

तो दूसरे दिन होगा, तीसरे दिन होगा। गाढ़ होगा तो दो वर्ष में, तीन वर्ष में या पाँच वर्ष में भी होगा। वाइफ के ऋणानुबंध बहुत गाढ़ होते हैं, 'हमें समभाव से निकाल करना है', इसलिए एक दिन उसका निकाल होकर रहेगा, उसका अंत आएगा। जहाँ गाढ़ ऋणानुबंध हों, वहाँ बहुत जागृति रखनी पड़ती है। इतना छोटा-सा साँप हो लेकिन सावधान तो रहना पड़ता है। और यदि बेखबर रहेंगे, अजाग्रत रहेंगे तो समाधान नहीं होगा। सामने वाला व्यक्ति बोल देता है और आप भी बोल देते हो। बोल देने का भी हर्ज नहीं है, परंतु बोलने के पीछे आपका 'समभाव से निकाल करना है' ऐसा निश्चय है इसलिए आपको द्वेष नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : दूसरा, ये लोग हर एक बात में 'अब चलेगा', यह नहीं होगा तो कोई हर्ज नहीं है, ऐसा करेंगे। यही सारी वृत्ति आ गयी है। पहले जो इन्सिस्टन्स (आग्रह) था कि 'नहीं, ऐसा ही होना चाहिए' उसके बजाय हर एक बात में 'अब चलेगा' यह जो इस तरह की मनोवृत्ति आ गई है समझौता करने की, यह वृत्ति बहुत ही खराब है, ऐसा मेरा मानना है।

दादाश्री : वह तो ऐसा है न, दो चीजें हैं। एक कॉम्प्रमाइज़ (समझौता) करता है और दूसरा क्या करता है ?

प्रश्नकर्ता : अड़ा रहता है, कि नहीं, इसी तरह करना पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ, उन दोनों को भगवान ने गलत कहा है, कि यूज़लेस फेलो (निकम्मा व्यक्ति) है। किसलिए ऐसा कर रहे हों ? घर जाकर पत्नी के साथ खा-पीकर मौज़ करो न ! अड़े रहने वाले को भी यूज़लेस कहा है और

'चलेगा' उन्हें भी यूज़लेस कहा है। क्या आपको लगता है कि भगवान उन दोनों को कैन्सल करते हैं ?

प्रश्नकर्ता : मुझे लगता है भगवान उन दोनों को इग्नोर (उपेक्षा) करते होंगे।

दादाश्री : नहीं, लेकिन यूज़लेस हैं, ये किसी काम के ही नहीं हैं। 'मेरे यहाँ तो नॉर्मलिटी वाले आना। जब ज़रूरत हो तब चला लें और ज़रूरत न हो तब उसकी (उपेक्षा) करें।' जैसा 'जहाँ-जहाँ जो भी उचित हैं, वहाँ उसे वैसा समझें, वहाँ-वहाँ वह वैसा आचरण करें, आत्मार्थी व्यक्ति वह है!' ऐसा श्रीमद् राजचंद्र कहते हैं, ऐसा व्यवहार में होना चाहिए।

सँभाल लें संसार की साझेदारी

प्रश्नकर्ता : मुख्य बात यह है कि घर में शांति रहनी चाहिए।

दादाश्री : परंतु शांति कैसे रहेगी ? लड़की का नाम शांति रखें, फिर भी शांति नहीं रहती। उसके लिए तो धर्म समझना चाहिए। घर के सभी सदस्यों से कहना चाहिए कि, 'हम घर के सभी सदस्य आपस में किसी के बैरी नहीं हैं, किसी का किसी से झगड़ा नहीं है। हमें मतभेद करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आपस में मिल-बाँटकर शांतिपूर्वक खाओ-पीओ। आनंद करो, मौज़ करो।' इस प्रकार आपको सोच-समझकर सब करना चाहिए। घर वालों के साथ कलह कभी भी नहीं करना चाहिए। किसी को परेशान करके खुद सुखी हो सके, ऐसा कभी नहीं हो सकता और आपको तो सुख देकर सुख लेना है। आप घर में सुख देंगे, तभी सुख मिलेगा।

यह तो कितनी चिंता-संताप ! मतभेद ज़रा भी कम नहीं होता, फिर भी मन में मानता है

कि मैंने कितना धर्म किया! अरे, घर में मतभेद टला? कम भी हुआ है? चिंता कम हुई? कुछ शांति आई? धर्म तो भीतर शांति देता है, आधि-व्याधि-उपाधि नहीं हो, उसे धर्म कहते हैं! स्वभाव (आत्मा) की ओर जाना उसे धर्म कहते हैं। यह तो क्लेश परिणाम बढ़ते ही रहते हैं!

प्रश्नकर्ता : अब मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : यदि आपको प्रेम है तो एडजस्टमेंट होगा ही।

प्रश्नकर्ता : अहंकार बीच में आता है?

दादाश्री : हाँ, वही न! अहंकार की ही सारी झंझट है न! मतभेद से तो हल नहीं आएगा। मतभेद पसंद नहीं है, फिर भी मतभेद हो जाते हैं न? सामने वाला ज्यादा खिंचतान करे तो आप छोड़ देना और ओढ़कर सो जाना। यदि छोड़ोगे नहीं और दोनों खिंचते रहेंगे तो दोनों को नींद नहीं आएगी और पूरी रात बिगड़ेगी। व्यवहार में, व्यापार में, साझेदारी में कैसे सँभालते हैं! तो इस संसार की साझेदारी में आपको नहीं सँभालना चाहिए?

यानी 'एडजस्ट' होना है जगत् में, क्योंकि हर एक चीज़ का 'एन्ड' होता है। और शायद वह लंबे समय तक चले, फिर भी आप उसे हेल्प नहीं करते, ज्यादा नुकसान करते हो। अपने आपका नुकसान करते हो और सामने वाले का नुकसान होता है! उसे कौन सुधार सकेगा? जो सुधरा हुआ हो, वही सुधार सकता है। खुद का ही ठिकाना न हो, वह सामने वाले को कैसे सुधार सकेगा?

'मैं' जाए तो आए हल

यह तो घर में वाइफ के साथ मतभेद हो जाए तो उसका समाधान करना नहीं आता, बच्चों

के साथ मतभेद खड़ा हो जाए तो उसका समाधान करना आता नहीं और उलझन में रहता है।

प्रश्नकर्ता : पति तो ऐसा ही कहता है न, कि वाइफ समाधान करे, मैं नहीं करूँगा!

दादाश्री : हाँ, यानी कि लिमिट पूरी हो गई। वाइफ समाधान करे और आप समाधान न करो तो आपकी लिमिट हो गई पूरी। खरा पुरुष हो न तो वह ऐसा बोले कि वाइफ खुश हो जाए और ऐसे करके गाड़ी आगे बढ़ाए और आप तो पंद्रह-पंद्रह दिनों तक, महीनों तक गाड़ी खड़ी रखते हो, ऐसा नहीं चलेगा। जब तक सामने वाले का मन का समाधान नहीं होगा तब तक आपका मुश्किल है। इसलिए समाधान करना चाहिए।

इस तरह घर में मतभेद पड़ेंगे तो कैसे चलेगा? स्त्री कहती है कि 'मैं तुम्हारी हूँ' और पति कहता है कि 'मैं तेरा हूँ', फिर मतभेद कैसा? आप दोनों के बीच 'प्रोब्लम' बढ़ेंगे तो अलगाव पैदा होगा। प्रोब्लम सॉल्व हो जाएँ, तो फिर अलगाव नहीं होगा। जुदाई के कारण दुःख है। और सभी को प्रोब्लम खड़े होते ही हैं, तुम्हें अकेले को ही होते हों ऐसा नहीं है। जितनों ने शादी की उतनों को प्रोब्लम खड़े हुए बिना नहीं रहते हैं।

पत्नी के साथ मतभेद पड़ता है तो उसके साथ एकता रखना। वाइफ के साथ मतभेद हो, वहाँ एकता न रहे, तब फिर और कहाँ रखोगे? एकता यानी क्या, कि कभी भी मतभेद नहीं पड़े। इस एक व्यक्ति के साथ तय करना कि तुम्हारे और मेरे बीच मतभेद नहीं पड़े, इतनी एकता करनी चाहिए। वैसी एकता रखी है आपने?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कभी सोचा ही नहीं। ये पहली बार सोच रहा हूँ।

दादाश्री : हाँ, यह सोचना पड़ेगा न? भगवान कितने विचार कर-करके मोक्ष में गए!

बातचीत करो न! उसमें कुछ खुलासा होगा। यह तो संयोग बैठा, इसलिए इकट्ठे हुए हैं, वर्ना इकट्ठे नहीं होते ! इसलिए कुछ बातचीत करो न! उसमें हर्ज क्या है? हम सब एक ही हैं। आपको इन सबसे जुदाई लगती है, क्योंकि भेदबुद्धि से मनुष्य को जुदा लगता है। बाकी सब एक ही हैं। मनुष्य में भेदबुद्धि होती है न? वाइफ के साथ तो भेदबुद्धि नहीं होती न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वही हो जाती है।

दादाश्री : यह वाइफ के साथ भेद कौन करवाता है? बुद्धि ही।

पत्नी और उसका पति दोनों पड़ोसी के साथ झगड़ा करते हैं, तब कैसे अभेद होकर झगड़ते हैं! दोनों ऐसे हाथ करके, तुम ऐसे और तुम वैसे! दोनों यों हाथ करते हैं तो हम समझ जाते हैं कि अहोहो! इन दोनों में इतनी एकता! यह इनका 'कोर्पोरेशन' अभेद है, ऐसा हमें लगता है। और बाद में घर में जाकर दोनों झगड़ने लगे, तब क्या कहेंगे? घर में वे दोनों झगड़ते हैं या नहीं झगड़ते? कभी तो झगड़ते होंगे न? वह कॉर्पोरेशन अंदर-अंदर जब झगड़ता है न, 'तू ऐसी और तुम वैसे, तू ऐसी और तुम वैसे...!' फिर घर में जमकर लड़ाई होती है न, तब तो कहता है, 'तू चली जा, यहाँ से, अपने घर चली जा, मुझे तेरी जरूरत ही नहीं है।' अब यह नासमझी नहीं है क्या? आपको क्या लगता है? तो अभेदता थी, वह टूट गयी और भेद उत्पन्न हुआ। यानी वाइफ के साथ भी 'तू तू, मैं मैं' हो जाती है। 'तू ऐसी है और तू वैसी है!' तब वह कहती है, 'तुम कहाँ सीधे हो?' अर्थात् घर में भी 'मैं और तू' हो जाता है।

'मैं और तू, मैं और तू, मैं और तू'! उससे पहले हम थे, 'हम दोनों एक हैं, हम ऐसे हैं, हम वैसे हैं। हमारा ही है यह।' उसमें से 'मैं और तू' हो गए! अब, मैं और तू हो गए इसलिए खींचातानी होती है। वह खींचातानी फिर कहाँ तक पहुँचती है? अंत में, हल्दीघाटी की लड़ाई शुरू हो जाती है। सर्व विनाश को निमंत्रित करने का साधन है, वह खींचातानी! इसलिए खींचातानी तो किसी के साथ मत होने देना।

संसार में कैसे रह सकते हैं, ऐसे फँसाव वाले संसार में? 'मैं और तू' हो, वहाँ जिया ही कैसे जाए? मैं और तू, मैं और तू में मतभेद नहीं लगता, क्या?

प्रश्नकर्ता : 'मैं' होता है तभी 'तू' होता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन 'मैं' चला गया है आपका? वह तो जब कटेगी तब पता चलेगा।

प्रश्नकर्ता : गया नहीं है लेकिन इतना समझ में आया है कि 'मैं' जाना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, 'मैं' जाएगा तो सब हल आ जाएगा।

अक्रल से अक्रल लड़े वहाँ होते हैं मतभेद

प्रश्नकर्ता : घर में मतभेद दूर करने के लिए क्या करें?

दादाश्री : मतभेद क्यों होते हैं, पहले इसका पता लगाओ। कभी ऐसा मतभेद होता है कि, एक लड़का और एक लड़की है, तो फिर दोनों लड़के क्यों नहीं हैं, ऐसा मतभेद होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसे तो छोटी-छोटी बातों में मतभेद होता है।

दादाश्री : अरे, ऐसी छोटी बातों में तो, वह तो इगोइज्म है। इसलिए, जब वह कहे कि 'ऐसा है', तब कहना, 'ठीक है।' ऐसा कहेंगे तो फिर कुछ नहीं होगा। लेकिन आप वहाँ अपनी अक्रल बीच में लाते हैं। अक्रल से अक्रल लड़ती है, इसलिए मतभेद होता है।

प्रश्नकर्ता : 'यह ठीक है' ऐसा मुँह से बोलने के लिए क्या करना चाहिए? ऐसा बोल नहीं पाते, इस अहम् को कैसे दूर करें?

दादाश्री : अब ऐसा बोल नहीं पाते, सही कहते हैं। इसके लिए थोड़े दिन प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। यह जो मैं कह रहा हूँ, वह उपाय करने के लिए थोड़े दिन प्रैक्टिस करो न, फिर वह फिट हो जाएगा, एकदम से नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : मतभेद क्यों होते हैं, इसकी वजह क्या है?

दादाश्री : मतभेद होता है, तब वह ऐसा समझता है कि 'मैं अक्रलमंद' और वह समझती है कि 'मैं अक्रलमंद'। ये अक्रल के बारदान आए! बेचने जाएँ तो चार आने भी नहीं आएँ, अक्रल के बारदान (खाली बोरे) कहते हैं उन्हें। इसके बजाय आप सयाने हो जाएँ, उसकी अक्रल को आप देखा करें कि अहोहो... कैसी अक्रलमंद है! तब वह भी शांत हो जाएगी। लेकिन आप भी अक्रलमंद और वह भी अक्रलमंद, अक्रल ही जहाँ लड़ने लगे, वहाँ क्या होगा फिर?

बाकी, घर में मतभेद नहीं पड़ने चाहिए। मतभेद हो, उसे मनुष्य ही कैसे कह सकते हैं? मतभेद टालना नहीं आया, तो उसे बुद्धि ही नहीं कहेंगे न! मतभेद को तो बुद्धि और समझ से तोड़ा जा सके ऐसा है। मतभेद टल सके इतनी जागृति तो प्रकृति गुण से भी आ सकती है। मति

कम होती है, इसलिए मतभेद होते हैं। मति 'फूल' (पूर्ण) होती तो मतभेद नहीं होते। लेकिन इस काल की वजह से अब सभी फ्रेक्चर हो गए हैं और भटक, भटक, भटक करते हैं! कुछ हेतु नहीं है, कुछ भान नहीं है, कुछ भी नहीं है। फिर घर में भी किसी से सुख नहीं मिलता उसे और घर वालों को भी किसी को सुख नहीं मिलता उससे। और मतभेद कम नहीं हुए हैं। वह कहता है, 'मैंने कुछ प्राप्त किया है'। अरे, मतभेद कम होने चाहिए, शांति बढ़नी चाहिए। कुछ तो परिणाम आना चाहिए। कुछ हुआ नहीं है और मन में क्या ही मानकर बैठे हैं! जान लिया उसे कहते हैं कि किसी के साथ मतभेद नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : जीवन में मतभेद तो होते हैं न? कोई भी व्यक्ति पूर्ण तो है ही नहीं न?

दादाश्री : मतभेद पड़ते हैं उसका अर्थ ही क्या? वह सेन्सलेस फेलो (मूर्ख व्यक्ति) है! मतभेद तो एक-दो होते हैं, यह तो पूरा दिन मतभेद पड़ते रहते हैं! उसे तो सेन्सलेस फेलो कहते हैं, फिर! घर में एक दिन भी मतभेद नहीं होना चाहिए। यह मतभेद करता है वह बुद्धि कम है इसलिए। बुद्धि से विचार करे, तो मतभेद करने की ज़रूरत ही नहीं है। लेकिन बुद्धि कम होती है तो वह मतभेद करता है और अपने आप को बुद्धिशाली मानता है। बुद्धिशाली तो उसे कहते हैं कि घर में सेफसाइड (सलामती) करे, बाहर सेफसाइड करे, सेफसाइड बढ़ाए उसे बुद्धिशाली कहते हैं। घर में आनंद कराए वह बुद्धिशाली या मुँह फूला हुआ हो वह बुद्धिशाली?

प्रश्नकर्ता : बुद्धिशाली तो जो विवेक से काम करे, उसे बुद्धिशाली कहते हैं?

दादाश्री : हाँ! विवेकपूर्वक सभी का सुख

बढ़े, ऐसा ढूँढ़ निकालता है, सुख कम हो ऐसा नहीं ढूँढ़ निकालता। यह तो घर में आकर दखल करता है, पूरा घर बिगाड़ देता है। ऐसी लाइफ क्यों होनी चाहिए! अपनी लाइफ बदल सकते हो, आप अपने विचारों को बदल सकते हो।

आपने तय किया कि, घर में मतभेद नहीं पड़ने देना है। ऐसा तय करके दूसरे से झंझट करे न, तब भी मतभेद नहीं पड़ता! लेकिन आप यह चाबी लगाए बगैर ही करते हो न, इससे झंझट हो जाती है। हम पहले से चाबी लगाकर बाद में करते हैं।

मतभेद अर्थात् टग ऑफ वॉर

आपको मतभेद ज़्यादा होते हैं कि उन्हें ज़्यादा होते हैं?

प्रश्नकर्ता : उन्हें ज़्यादा होते हैं।

दादाश्री : ओहोहो! मतभेद यानी क्या? मतभेद का अर्थ आपको समझाता हूँ। यह रस्सा-कशी का खेल होता है न, वह देखा है आपने?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : दो-चार लोग इस ओर खींचते हैं और दो-चार लोग उस ओर खींचते हैं। मतभेद अर्थात् रस्साकशी। अतः आपको देखना है कि घर में पत्नी बहुत जोर से खींच रही है और हम भी जोर से खींचेंगे तब फिर क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : टूट जाएगा।

दादाश्री : और टूट जाने पर गाँठ लगानी पड़ती है। तो गाँठ लगाकर फिर चलाना, इसके बजाय अगर साबुत रखें, उसमें क्या हर्ज है? इसलिए जब वह बहुत खींचे न, तब आपको छोड़ देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दो में से छोड़ेगा कौन?

दादाश्री : समझदार, जिसमें अक्ल ज़्यादा है वह छोड़ देगा और कमअक्ल खींचे बगैर रहेगा ही नहीं! इसलिए आप अक्लमंद को छोड़ देना चाहिए। छोड़ देना, वह भी एकदम से नहीं छोड़ना। एकदम से छोड़ देंगे न, तो सामने वाला गिर पड़ेगा। इसलिए धीरे-धीरे, धीरे-धीरे छोड़ना। जब मेरे साथ कोई खींचने लगे तब मैं धीरे-धीरे छोड़ देता हूँ। वर्ना गिर पड़ेगा बेचारा। अब आप छोड़ दोगे ऐसे? अब छोड़ना आएगा? छोड़ दोगे न? छोड़ दो, वर्ना फिर रस्से में गाँठ लगाकर चलाना पड़ेगा। रोज़ रोज़ गाँठ लगाना, वह क्या अच्छा लगेगा? फिर गाँठ तो लगानी ही पड़ेगी न? और फिर रस्से को तो चलाना ही पड़ेगा न! आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, करना ही पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ.. अतः छोड़ देना है और वह भी फिर से गिर न जाए इस तरह से! फिर उनके मन में हिम्मत आ जाएगी कि ये इतना बड़प्पन दिखाते हैं तो मैं भी बड़प्पन दिखाऊँ, ऐसा उनका मन हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कोई नहीं रखता, एक भी झुकता ही नहीं।

दादाश्री : वह तो जो सयाना होगा वह छोड़ देगा। वर्ना एक बार गाँठ पड़ने के बाद वह गाँठ नहीं जाएगी। इसलिए डोरी घर में इस तरह रखो, गाँठ न लगानी पड़े। टूटे नहीं ऐसे रखो। तो यह नहीं समझना चाहिए?

घर में मतभेद होने चाहिए? एक अंश भी नहीं होना चाहिए! घर में अगर मतभेद होता है तो यू आर अनफिट (योग्य नहीं) फॉर, अगर हज़बेन्ड ऐसा करे तो वह अनफिट फॉर हज़बेन्ड और वाइफ ऐसा करे तो अनफिट फॉर वाइफ।

बच्चे आपकी निर्बलता देखते हैं

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नी के झगड़ों का बच्चों पर क्या असर होता है ?

दादाश्री : ओहोहो! बहुत बुरा असर होता है। इतना सा बालक हो वह भी ऐसे देखता रहता है। पापा मेरी मम्मी के साथ बहुत झगड़ा करते हैं। पापा ही खराब हैं। लेकिन वह बोलता नहीं। वह जानता है कि बोलूँगा तो मुझे मारेंगे। मन में यह सब ध्यान में लेता है, नोटेड इट्स कन्टेन्टस (यह ध्यान में लिया गया कि इसमें यह है)। लेकिन घर में ऐसा तूफान देखता है तो फिर मन में गाँठ बाँध लेता है कि 'बड़ा होने पर पापा को पीटूँगा।' आपके लिए अभी से तय कर लेता है। फिर वह बड़ा होने पर पिटाई करता है! 'क्या ऐसे पीटने के लिए मैंने तुम्हें बड़ा किया था?' 'तब आपको किसने बड़ा किया था?' वह कहेगा! 'अरे, वहाँ तक, मेरे बाप तक पहुँचा?' तब कहेगा, 'आपके दादा तक पहुँचूँगा।' आपने ऐसा बोलने का स्कोप (अवसर) दिया तब न? ऐसी गाँठ बाँधने दो तो आपकी ही भूल है न! घर में डाँटें किसलिए? यदि उसे डाँटो ही नहीं तो बच्चा भी देखता है कि पापा कितने अच्छे हैं!

प्रश्नकर्ता : यहाँ पत्नी से बहुत किच-किच होती है।

दादाश्री : तब बच्चा क्या करता है? बच्चा देखता रहता है, हाँ.. ये पापा तो अच्छे हैं, लेकिन ये मम्मी ही ऐसी है! मम्मी ही खराब है, बहुत ही खराब है। फिर मन में अभिप्राय देता है, बच्चा। मन में तय करता है कि बड़ा हो जाऊँगा तब मम्मी को मारूँगा। मेरे पापा का खराब-खराब करती है। ये बच्चे फर्स्ट क्लास न्याय समझते हैं।

इन दोनों में किसकी भूल हुई है क्या वह नहीं समझते बच्चे? ये छोटे-छोटे बच्चे न्याय करते हैं, क्योंकि उनमें समझ तो इतनी अधिक होती है, वह इन्डियन बच्चा है न! इसलिए कहता है, ये मम्मी ही गलत है।

अरे, यह न्याय करता है! अब, यह तरीका है आपका? आपका तमाशा बच्चे न देखे ऐसा करना चाहिए। हर एक बाबत में दरवाजे बंद करते हो तो इसमें दरवाजे बंद नहीं करने चाहिए? बच्चों की हाज़िरी में ऐसा करना चाहिए? और बच्चे स्कूल गए हों उस समय थोड़ी देर लड़ाई कर लेना, जिसे आदत हो वे जिस हेबिट पड़ी हो वे। यानी डाँटना हो तो वे स्कूल में जाएँ उसके बाद डाँटना, शौक हो तो। वर्ना डाँटना नहीं चाहिए। या फिर बच्चे होने से पहले ही लड़ाई कर लेनी चाहिए। बच्चे होने के बाद लड़ाई नहीं करनी चाहिए। यह तो स्कूल शुरू किया ऐसा कहेंगे, स्कूल की शुरूआत हो गई। विद्यार्थी पर असर होता है इसलिए नहीं लड़ सकते।

ये तो बच्चों की हाज़िरी में भी एक-दूसरे को मारते हैं। एक व्यक्ति को उसकी पत्नी ने मारा था, उनके बच्चों के सामने! अब, ऐसा क्या कभी अच्छा दिखता है, शोभा देता है?

बच्चे अच्छे बनें और संस्कारी बनें, वह अपना रास्ता। बच्चों को जो पसंद नहीं हो, वह कार्य नहीं करना चाहिए। बच्चों से पूछना चाहिए कि 'हम दोनों झगड़ते हैं तो आपको पसंद है?' तब कहे, 'नहीं पसंद।' तो आपको बंद कर देना चाहिए। बड़े गुरु नहीं मिले तो बच्चे ही गुरु (के तौर पर) मिल गए! तो बच्चे अच्छे बनेंगे, आपके अच्छे संस्कार सीखेंगे। बच्चे माँ-बाप का ऐसा कुछ अच्छा देखते हैं न, तो बहुत अच्छे बनते हैं। उन्हें सिखाना नहीं पड़ता। संस्कार देखकर

संस्कार सीख जाते हैं। बच्चे आपका कुछ भी गलत न देखे, ऐसा वर्तन होना चाहिए। बच्चे संस्कारी होने चाहिए। ऐसी लाइफ को लाइफ कैसे कहेंगे? जीवन जीने के लिए कुछ तो होना चाहिए या नहीं होना चाहिए, कुछ कला वगैरह चाहिए या नहीं!

आंतरिक मतभेद टालने के उपाय

प्रश्नकर्ता : आपके पास ऐसा क्या सिक्रेट (रहस्य) है कि मतभेद न हों?

दादाश्री : वही सिक्रेट देना चाहता हूँ आपको। यह तो माइन्ड फ्रेक्चर हो गया है, बाँड़ी फ्रेक्चर हो गई है, सब फ्रेक्चर हो गया है। माइन्ड कैसा हो गया है कि डॉलर चला जाए तो जैसे खुद मर गया हो ऐसा लगता है। नहीं लगता ऐसा? यह मन फ्रेक्चर हो गया है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब बारह सौ डॉलर भाड़ा चुकाना हो तो लगेगा ही न!

दादाश्री : ऐसा लगने से वह भाड़ा चुकता हो जाता होगा? लगने से चुकता हो जाता होगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन नैचुरल...

दादाश्री : नहीं, वह निर्बलता है, वीकनेस है सारी! यह माइन्ड फ्रेक्चर हो गया है। वह फ्रेक्चर नहीं होना चाहिए।

हमारे घर पर तो हमारी वाइफ, हीराबा है, तो आज कितने ही सालों से हममें मतभेद नहीं हुआ है। वे कभी रुपये व्यर्थ खर्च कर रहे हो तब भी मैं ऐसा नहीं कहता कि...

प्रश्नकर्ता : ज्ञान से पहले भी हीराबा से कभी मतभेद नहीं होता था?

दादाश्री : हाँ, पहले होता था। हमारी शादी को पचपन साल हो गए। तो पच्चीस-तीस साल की उम्र तक ज़रा भूलचूक हुई थी। ज्ञान से पहले, कम उम्र में हम भी कुछ उम्र तक सँड़सी लेकर यों फट से फेंकते थे। आबरूदार लोग थे न! खानदानी! छः गाँव के पटेल! बाद में पता चला कि मेरी ये खानदानी चली गई। आबरू की नीलामी हो गई। सँड़सी मारी तभी से आबरू की नीलामी हो गई, ऐसा नहीं कहा जाएगा? क्या लोग पत्नी को सँड़सी मारते हैं? नासमझी का बोरा! उसे और कुछ नहीं मिला तो सँड़सी मारी! यह क्या हमें शोभा देता है?

प्रश्नकर्ता : सँड़सी मारी वह तो एक बार मारने से पूरा हो गया। किन्तु वे, जो आंतरिक मतभेद होते हैं, वे बिहेवियर में (वर्तन में) परिणामित होते हैं। वह तो बहुत भयंकर कहलाएगा न?

दादाश्री : आंतरिक मतभेद न? वे तो बहुत भयंकर!

पर मैंने खोजबीन की थी कि इस आंतरिक मतभेद का कोई उपाय है? लेकिन वह किसी शास्त्र में नहीं मिला। इसलिए फिर मैंने खोजबीन की, खुद कि इसका उपाय इतना ही है कि मैं अपना मत ही छोड़ दूँ, तब कोई मतभेद नहीं रहेगा। मेरा मत ही नहीं, आपका मत ही मेरा मत!

मैं तीस साल का था तभी से सब रीपेर कर दिया था। घर में फिर झंझट ही नहीं, मतभेद ही नहीं। बाकी, हमसे पहले गड़बड़ हो गई थी, नासमझी की गड़बड़। क्योंकि पतिपना करने गया था। मैंने तो बहुत रौब जमाया था।

प्रश्नकर्ता : आपने क्या रौब जमाया था, दादा?

दादाश्री : अरे! बहुत रौब, यों बहुत कड़ाई थी। फिर समझ में आ गया, यह सब तो भूल हो रही है। इसलिए फिर बंद कर दिया। बचपन में तो समझ में नहीं आता था कि ये भूलें हैं, निरी भूलें ही हैं न सभी!

प्रश्नकर्ता : इसलिए हीराबा कहते थे कि दादा तो तीखे भँवरे जैसे हैं!

दादाश्री : तीखे भँवरे जैसे...

उन दिनों कड़ाई बहुत, बहुत कड़ाई थी! यह तो ज्ञान की वजह से सब चली गई, सारी कड़ाई। आज छब्बीस साल से चली गई है। पहले थी लेकिन वह कम थी। पर हीराबा के साथ तो बहुत साल से मैंने बंद कर दी थी।

प्रश्नकर्ता : सभी पतिपना जताते हैं और आप पतिपना जताते थे, उसमें अंतर तो होगा ही न?

दादाश्री : अंतर? कैसा अंतर? पतिपना जताया यानी सब पागलपन, मेडनेस कहलाता है। अंधेरे के कितने भेद होते हैं?

प्रश्नकर्ता : फिर भी आपका थोड़ा अलग प्रकार का होगा न? आपका कुछ नये ही प्रकार का होगा न?

दादाश्री : थोड़ा अंतर था। एक बार मतभेद बंद करने के बाद फिर से मतभेद नहीं होने देते थे और हो जाता था तो हमें मोड़ना आता था।

पैंतालीस साल हो गए, हमारे घर में वाइफ के साथ हमारा मतभेद नहीं हुआ है। वे भी मर्यादा में रहकर बात करती हैं और मैं भी मर्यादा में रहकर बात करता हूँ और वे किसी दिन मर्यादा के बाहर की बात करें तो मैं समझ जाता हूँ कि वह मर्यादा छोड़ रही हैं। इसलिए मैं कह देता हूँ

कि आपकी बात ठीक है, लेकिन मतभेद नहीं होने देता। एक मिनट के लिए उन्हें ऐसा महसूस नहीं होने देता कि वे मुझे दुःखी कर रहे हैं। हमें भी ऐसा नहीं लगता कि वे हमें दुःखी करती हैं।

समझदार हट जाता है, टकराता नहीं

प्रश्नकर्ता : हमें क्लेश नहीं करना हो, लेकिन कोई सामने से आकर झगड़ने लगे, तब क्या करें? उसमें एक जाग्रत हो पर सामने वाला क्लेश करे, तब तो क्लेश होगा ही न?

दादाश्री : इस दीवार के साथ कोई लड़ेगा तो कितने समय तक लड़ सकेगा? इस दीवार से कभी सिर टकरा जाए, तो आप उसके साथ क्या करोगे? सिर टकराया, यानी आपकी दीवार से लड़ाई हो गई, तो क्या दीवार को मारोगे? इसी प्रकार ये जो बहुत क्लेश कराते हैं, वे तो सभी दीवारें हैं! इसमें सामने वाले को क्या देखना? आपको अपने आप समझ लेना है कि ये दीवार जैसे हैं। ऐसा समझोगे फिर कोई तकलीफ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम मौन रहते हैं तो सामने वाले पर उल्टा असर होता है कि इनका ही दोष है और वह ज्यादा क्लेश करता है।

दादाश्री : यह तो आपने मान लिया है कि आपके मौन रहने से ऐसा हुआ। रात में व्यक्ति उठा और बाथरूम में जाते हुए अंधेरे में दीवार से टकरा गया, तब वहाँ आप मौन रहे, इसलिए वह टकराई?

मौन रहो या बोलो, उसे असर ही नहीं होता, कुछ लेना-देना नहीं। आपके मौन रहने से सामने वाले पर असर होता है ऐसा कुछ नहीं होता या आपके बोलने से असर होता है, ऐसा भी कुछ नहीं होता। 'ओन्ली साइन्टिफिक

सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' (केवल वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण) हैं। किसी की इतनी सत्ता नहीं है। इतनी सी सत्ता बगैर का जगत्, उसमें कोई क्या कर सकता है? यदि इस दीवार की सत्ता होती तो इसकी सत्ता होती! इस दीवार को डाँटने की हमारी सत्ता है? ऐसा सामने वाले का है। और उस निमित्त से जो टकराव होता है वह तो छोड़ने वाला नहीं है। व्यर्थ में शोर मचाने का क्या अर्थ है? उसके हाथ में सत्ता ही नहीं है वहाँ! यानी आप दीवार जैसे हो जाओ न! आप पत्नी को डाँटते रहोगे तो उसके भीतर भगवान बैठे हैं। वे नोंध (लंबे समय तक याद रखना) करेंगे कि यह मुझे डाँटता है। और आपको वह डाँटे तब आप दीवार जैसे हो जाओगे, तो आपके अंदर बैठे हुए भगवान आपको हेल्प करेंगे।

इस दीवार के साथ मतभेद करोगे तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : सिर फूट जाएगा।

दादाश्री : सिर फूट जाए, तब क्या दीवार को कोई हर्ज़ है? इसलिए मतभेद मत करो। दीवार को तो क्या लेना-देना है? यानी भूल आपकी हो तब ही दीवार टकराती है। उसमें दीवार की भूल नहीं है। तब लोग मुझसे कहते हैं कि, 'ये सभी लोग क्या दीवार हैं?' तब मैं कहता हूँ कि, 'हाँ, वे लोग भी दीवार ही हैं। यह मैं देखकर बताता हूँ, यह कोई गप्प नहीं हैं।'

किसी के साथ मतभेद होना और दीवार से टकराना, ये दोनों समान चीज़ हैं, इन दोनों में फर्क नहीं है। ये दीवार से टकराते हैं, वह नहीं दिखने से टकराते हैं। और वह जो मतभेद होता है वह भी नहीं दिखने से मतभेद होता है। आगे

का उसे दिखाई नहीं देता, आगे का उसे सोल्युशन नहीं मिलता इसलिए मतभेद होता है। यह क्रोध होता है, यह भी नहीं दिखने से क्रोध होता है। ये क्रोध-मान-माया-लोभ सब करते हैं, वह नहीं दिखने से ही सब करते हैं! उस बात को इस तरह समझना चाहिए न?

एडजस्ट होना आए, वह 'मनुष्य'

प्रत्येक टकराव में हमेशा दोनों को नुकसान होता है। आप सामने वाले को दुःख पहुँचाओगे तो साथ साथ, उसी तरह ऑन द मोमेन्ट (उसी क्षण) आपको भी दुःख पहुँचे बगैर रहेगा ही नहीं। यह टकराव है, इसलिए मैंने यह उदाहरण दिया है कि मार्ग पर वाहन व्यवहार का धर्म क्या है कि टकराओगे तो आप मर जाओगे। टकराने में जोखिम है इसलिए किसी के साथ टकराना नहीं। इसी प्रकार इन व्यावहारिक कार्यों में भी मत टकराना। टकराने में हमेशा जोखिम ही है। और टकराव तो कभी-कभी ही होता है, क्या महीने में दो सौ बार होता है? महीने में कितनी बार ऐसा होता है?

प्रश्नकर्ता : कभी कभार, दो-चार बार।

दादाश्री : हाँ, तो उतना आपको सुधार लेना है! मेरा कहना है कि, आप क्यों बिगाड़ते हो? किसी भी बात को बिगाड़ना आपको शोभा नहीं देता। ये सब तो ट्रैफिक के लॉज हैं। ये ट्रैफिक के लॉ (नियम) के आधार पर चलते हैं, वहाँ खुद की समझ से कोई नहीं चलता न? ये ट्रैफिक के लॉ में और इसमें खुद की समझ का ही कानून, नहीं? उसमें (ट्रैफिक में) तो कभी भी अड़चन नहीं आती। उस ट्रैफिक का कितना सुंदर प्रबंध है! अब यदि आप इन नियमों को समझकर चलोगे, तो फिर से कोई अड़चन नहीं आएगी।

अर्थात् इन नियमों को समझने में भूल हुई है। नियम समझाने वाला समझदार होना चाहिए।

आपने इन ट्रैफिक के नियमों का पालन करने का निश्चय किया होता है, तो कितना सुंदर पालन होता है! उसमें क्यों अहंकार जाग्रत नहीं होता कि वे भले कहें लेकिन हमें तो ऐसा ही करना है।

प्रश्नकर्ता : वह टिकट दे देता है न, मामा! (पुलिस वाला दंड देता है न!)

दादाश्री : क्योंकि उन ट्रैफिक के नियमों में वह खुद ही, बुद्धि से इतना अधिक समझ सकता है, स्थूल है इसलिए, कि हाथ कट जाएगा, तुरंत मर जाऊंगा। उसी प्रकार इसमें यह मालूम नहीं है कि टकराने पर मर जाऊंगा। बुद्धि से नहीं समझ सकता। यह सूक्ष्म बात है। इससे सभी नुकसान सूक्ष्म होते हैं!

अतः जिसे एडजस्ट होना नहीं आता, उस व्यक्ति को व्यक्ति कैसे कहेंगे? जो संयोगों के वश होकर एडजस्ट हो जाता है, उस घर में कोई भी झंझट नहीं होती। हम भी हीराबा से एडजस्ट होते ही आए थे न! उनसे लाभ उठाना हो तो एडजस्ट होकर रहो। यह तो फायदा भी किसी चीज़ का नहीं और बैर बाँधेगे, वह अलग! क्योंकि प्रत्येक जीव स्वतंत्र है और खुद सुख खोजने आया है। वह दूसरों को सुख देने आया है, ऐसा नहीं है। उसे क्या? खुद सुख ढूँढने आया है। अब, उसे सुख के बजाय दुःख मिले तो बैर बाँधता है, फिर चाहे वह पत्नी हो या बेटा हो।

दोनों निश्चय करें तो बैठेगा मेल

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहना है तो एडजस्टमेंट एक पक्षीय तो नहीं होना चाहिए न?

दादाश्री : व्यवहार तो उसे कहते हैं कि

‘एडजस्ट’ हो जाएँ। यानी पड़ोसी भी कहें कि, ‘सब घर में झगड़े हैं, परंतु इस घर में झगड़ा नहीं है।’ उसका व्यवहार सबसे अच्छा माना जाता है। जिसके साथ रास नहीं आए, वहीं पर शक्ति विकसित करनी है, रास आए वहाँ तो शक्ति है ही। नहीं रास आए वह तो कमजोरी है। मुझे सबके साथ कैसे रास आ जाता है? जितने एडजस्टमेंट्स लेंगे उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी और अशक्तियाँ टूटती जाएँगी। सच्ची समझ तो, दूसरी सभी समझ को ताले लगेँगे तभी आएगी। नरम स्वभाव वालों के साथ तो हर कोई ‘एडजस्ट’ हो जाता है लेकिन टेढ़े-कठोर-गर्म मिजाज लोगों के साथ, सभी के साथ ‘एडजस्ट’ होना आ गया तो काम हो गया। कितना ही गंगा-लुच्चा व्यक्ति क्यों न हो, फिर भी उसके साथ ‘एडजस्ट’ होना आ जाए, दिमाग़ फिरे नहीं, तो वह काम का है! भड़क जाओगे तो नहीं चलेगा। संसार की कोई चीज़ आपको ‘फिट’ नहीं होगी। आप ही उसे ‘फिट’ हो जाओ तो यह दुनिया सुंदर है और यदि उसे ‘फिट’ करने गए तो दुनिया टेढ़ी है। इसलिए एडजस्ट एवरीव्हेर! आप उसे ‘फिट’ हो जाओ तो कोई हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा होता है कि एक ही समय में दो व्यक्तियों के साथ एक ही बात पर एडजस्टमेंट लेना हो, तो उसी समय दोनों के साथ कैसे एडजस्टमेंट ले सकते हैं?

दादाश्री : दोनों के साथ (एडजस्टमेंट) ले सकते हैं। अरे, सात लोगों के साथ लेना हो तो भी लिया जा सकता है। जब एक पूछे कि, ‘मेरा क्या किया?’ तब कहो, ‘हाँ, भाई, आपके कहे मुताबिक करूँगा।’ दूसरे को भी ऐसा कहना कि, ‘आप कहेंगे वैसा ही करेंगे।’ ‘व्यवस्थित’ से बाहर होने वाला नहीं है। इसलिए कुछ भी

करके झगड़ा मत होने देना। मुख्य चीज़ 'एडजस्टमेंट' है। 'हाँ' से मुक्ति है। आपने 'हाँ' कहा, फिर भी 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ होने वाला है? लेकिन 'नहीं' कहा तो महा-उपाधि!

घर में पति-पत्नी दोनों निश्चय करें कि मुझे एडजस्ट होना है, तो दोनों का हल आ जाएगा। वह ज़्यादा खींचतान करे, तब आप 'एडजस्ट' हो जाना तो हल आएगा। यह समझने जैसा है। ज़रा सी भी झंझट नहीं करनी है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'।

जिसे 'एडजस्ट' होने की कला आ गई, वह दुनिया से 'मोक्ष' की ओर मुड़ गया। एडजस्टमेंट हो गया, वही ज्ञान है। जो एडजस्टमेंट सीख गया, वह पार उतर गया। जो भुगतना है, वह तो भुगतना ही है लेकिन जिसे एडजस्टमेंट लेना आ गया, उसे तकलीफ नहीं होगी, हिसाब साफ हो जाएगा।

डिसएडजस्टमेंट, वही मूर्खता

प्रश्नकर्ता : एडजस्टमेंट की जो बात है, उसके पीछे क्या भाव है? कहाँ तक 'एडजस्टमेंट' लेना चाहिए?

दादाश्री : भाव शांति का है, हेतु शांति का है। अशांति पैदा नहीं होने देने की तरकीब है। 'दादा' का 'एडजस्टमेंट' का विज्ञान है, ग़ज़ब का 'एडजस्टमेंट' है यह। और जहाँ 'एडजस्ट' नहीं होते, वहाँ आपको उसका स्वाद तो आता ही होगा न? यह 'डिसएडजस्टमेंट' वही मूर्खता है। एडजस्टमेंट को हम न्याय कहते हैं, आग्रह-दुराग्रह वह कोई न्याय नहीं कहलाता। किसी भी प्रकार का आग्रह, वह न्याय नहीं है। हम किसी भी बात पर अड़े नहीं रहते। जिस पानी से मूँग पक जाएँ, उससे पका लेते हैं, अंत में गटर के पानी से भी पका लेते हैं!

यहाँ घर पर एडजस्ट होना नहीं आता और आत्मज्ञान के शास्त्र पढ़ने बैठते हैं! अरे, छोड़ न इसे, पहले 'यह' सीख न! घर में 'एडजस्ट' होना तो कुछ आता नहीं है। ऐसा है यह जगत्! इसलिए काम निकाल लेने जैसा है।

'ज्ञानी' तो सामने वाला टेढ़ा हो फिर भी उसके साथ एडजस्ट हो जाते हैं। 'ज्ञानी पुरुष' को देखकर चले तो सभी तरह के एडजस्टमेंट लेना आ जाएगा। इसके पीछे का साइन्स (विज्ञान) क्या कहता है कि 'वीतराग हो जाओ, राग-द्वेष मत करो।' यह तो भीतर थोड़ी आसक्ति रह जाती है, इसलिए मार पड़ती है।

पत्नी है, आपका काउन्टर वेट

प्रश्नकर्ता : मैं वाइफ के साथ एडजस्ट होने की बहुत कोशिश करता हूँ, लेकिन एडजस्ट नहीं हो पाता।

दादाश्री : यह सब हिसाब के अनुसार है! टेढ़ा बोल्ट और टेढ़ा नट, वहाँ सीधा नट घुमाने से कैसे चलेगा? आपको ऐसा होता होगा कि 'यह स्त्री जाति ऐसी क्यों है?' लेकिन स्त्री जाति तो आपका 'काउन्टर वेट' है। जितना आपका दोष, उतनी वह टेढ़ी, इसलिए तो हमने सब 'व्यवस्थित' है, ऐसा कहा है न?

प्रश्नकर्ता : सभी हमें सीधा करने आए हैं, ऐसा लगता है।

दादाश्री : तो सीधा तो करना ही चाहिए आपको। सीधे हुए बगैर दुनिया चलती नहीं न! अगर सीधा नहीं होगा तो फिर बाप कैसे बनेगा? जब सीधा होगा तभी बाप बनेगा। स्त्री जाति ऐसी है कि वह नहीं बदलेगी, इसलिए आपको बदलना होगा। वह सहज जाति है, वह बदल जाए ऐसी नहीं है।

वाइफ, वह क्या चीज़ है?

प्रश्नकर्ता : आप बताइए।

दादाश्री : वाइफ इज़ द काउन्टर वेट ऑफ मेन। यदि वह काउन्टर वेट नहीं होगा तो व्यक्ति लुढ़क जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : जैसे इंजन में काउन्टर वेट रखा जाता है, वर्ना इंजन चलते चलते लुढ़क जाएगा। इसी तरह मनुष्य का काउन्टर वेट स्त्री है। यानी स्त्री होगी तो लुढ़केगा नहीं। वर्ना दौड़-धूप करके भी कोई ठिकाना नहीं रहता, यह आज यहाँ हो और कल कहाँ से कहाँ निकल गया हो! यह स्त्री है इसलिए वह वापस घर आता है। वर्ना वह घर आता क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं आता।

दादाश्री : स्त्री उसका काउन्टर वेट है। पुरुषों के लिए स्त्रियाँ 'काउन्टर वेट' हैं। जब वह भी कम पड़ता है, तब बेटियाँ 'काउन्टर वेट' बनती हैं। 'काउन्टर वेट' के बिना चल ही नहीं सकता, वर्ना उलट जाएगा!

संसार में भले ही और कुछ न आए, तो कोई हर्ज नहीं है। व्यवसाय करना कम आए तो हर्ज नहीं है लेकिन एडजस्ट होना आना चाहिए। अर्थात्, वस्तुस्थिति में एडजस्ट होना सीख जाना चाहिए। इस काल में एडजस्ट होना नहीं आया तो मारा जाएगा।

ज्ञानी सिखाते हैं काउन्टरपुली लगाना

किसी दिन रात को वाइफ कहे, 'मुझे वह साड़ी नहीं दिलवाओगे? मुझे वह साड़ी दिलवानी पड़ेगी।' तब पति पूछता है, 'तूने किस क्रीमत

की साड़ी देखी थी?' तब वाइफ कहती है, 'बाईस सौ की है, ज्यादा नहीं है।' तब वह कहता है, 'तुम बाईस सौ की ही है, कहती हो लेकिन मैं अभी रुपए लाऊँ कैसे? अभी पैसों का जुगाड़ नहीं है। दो सौ-तीन सौ की होती तो दिलवा देता, लेकिन तुम बाईस सौ कह रही हो।' वह (पत्नी) रूठकर बैठी रहेगी। अब क्या दशा होगी फिर! पति के मन में ऐसा भी होता है कि अरे, इससे तो शादी नहीं की होती तो अच्छा था! शादी के बाद पछताएँ, तो वह किस काम का? अर्थात् ऐसे दुःख हैं।

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा कहना चाहते हैं कि पत्नी को बाईस सौ रुपए की साड़ी दिलवा देनी चाहिए?

दादाश्री : दिलवाना या नहीं दिलवाना, वह आपकी कुशलता पर निर्भर करता है। रूठकर रोज़ रात को कहेगी कि 'खाना नहीं बनाऊँगी' तब आप क्या करोगे? बावर्ची कहाँ से लाओगे? तो फिर कर्ज़ लेकर भी (साड़ी) दिलवानी पड़ेगी न?

आप कुछ ऐसा कर दो कि वह खुद ही साड़ी नहीं लाए। यदि आपको महीने के आठ सौ पाउन्ड मिलते हैं, तो आप सौ पाउन्ड अपने जेबखर्च के लिए रखकर सात सौ पाउन्ड उन्हें दे दें फिर क्या आपसे कहेगी कि साड़ी दिलवाइए? बल्कि कभी आप मज़ाक करना कि 'वह साड़ी बहुत अच्छी है, क्यों नहीं लाती?' उसका प्रबंध उसे खुद ही करना होगा! जब हमें प्रबंध करना हो, तब हम पर जोर डालती है। यह सारी कला मैंने 'ज्ञान' होने से पहले सीख ली थी, बाद में ज्ञानी हुआ। सभी कलाएँ मेरे पास आ गईं, तब मुझे ज्ञान हुआ। अब बोलो, यह कला नहीं है, इसीलिए ये दुःख हैं न!

मैं हर एक व्यक्ति के साथ काउन्टरपुली डाल देता हूँ। सिर्फ अहंकार निकाल देने से काम हो जाए, ऐसा नहीं है, काउन्टरपुली भी हर एक के साथ डालनी पड़ती है। इसलिए तो हमारा किसी के साथ मतभेद ही नहीं होता न! हम समझते हैं कि इस व्यक्ति के इतने ही रिवाँल्युशन्स हैं। इसलिए उस अनुसार मैं काउन्टरपुली लगा देता हूँ।

प्रश्नकर्ता : कोई भी, सामने वाले के लेवल पर आए तभी बात होती है?

दादाश्री : हाँ, उसके रिवाँल्युशन्स पर आए तभी बात होती है। यह आपके साथ बातचीत करते हुए हमारे रिवाँल्युशन्स कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं! पूरे वर्ल्ड में घूम आते हैं! आपको काउन्टरपुली डालना नहीं आता, तो उसमें कम रिवाँल्युशन वाले इंजन का क्या दोष? वह तो आपका दोष कि आपको काउन्टरपुली डालना नहीं आता!

हम काउन्टरपुली नहीं लगाएँ तो सामने वाले का पट्टा टूट जाता है। यह तो मैंने अपने आप इस थ्योरी (सिद्धांत) की खोजबीन की थी। उससे पहले आमने-सामने टकराव होता था, वह सब काउन्टरपुली लगाने से बंद हो गया।

काउन्टरपुली से टले मतभेद

यह मतभेद पड़ने का कारण क्या है? आपकी वाइफ के सौ रिवाँल्युशन्स हों और आपके पाँच सौ रिवाँल्युशन्स हों और आपको बीच में काउन्टरपुली डालना नहीं आता इसलिए चिनगारियाँ उड़ती हैं, झगड़े होते हैं। अरे! कई बार तो इंजन भी टूट जाता है। रिवाँल्युशन्स समझे आप? आपके पाँच सौ होते हैं, किसी के हजार होते हैं, किसी के बारह सौ होते हैं। जिसका जैसा डेवेलपमेन्ट

हो उस अनुसार रिवाँल्युशन्स होते हैं। बीच में काउन्टरपुली डालो तभी उसे आपकी बात समझेगी। काउन्टरपुली मतलब आपको बीच में पट्टा डालकर अपने रिवाँल्युशन्स कम कर देने पड़ेंगे।

दोनों के रिवाँल्युशन्स बराबर करने के लिए काउन्टरपुली लगानी पड़ती है। हज़बेन्ड को वाइफ के साथ काउन्टरपुली लगाना नहीं आता इसलिए फिर झगड़ा ही होगा न! काउन्टरपुली अलग से डालकर बातचीत करो ताकि सामने वाले को आपकी बात समझ आए।

हमें पहले अपना मत नहीं रखना चाहिए। सामने वाले से पूछना चाहिए कि इस बारे में आपका क्या कहना है? सामने वाला अपना पकड़कर रखे तो हमें अपना छोड़ देना चाहिए। हमें तो इतना ही देखना है कि किस तरह सामने वाले को दुःख न हो। अपना अभिप्राय सामने वाले पर थोपना नहीं है। सामने वाले का अभिप्राय हमें लेना है। हम तो सबके अभिप्राय लेकर 'ज्ञानी' हुए हैं। मैं मेरा अभिप्राय किसी पर थोपने जाऊँ तो मैं ही कच्चा पड़ जाऊँगा। अपने अभिप्राय से किसी को दुःख नहीं होना चाहिए। तेरे रिवाँल्युशन्स अठारह सौ हों और सामने वाले के छह सौ हों और तू तेरा अभिप्राय उस पर थोपने जाए तो सामने वाले का इंजन टूट जाएगा। उसके सभी गियर बदलने पड़ेंगे।

ज़रूरत है बाल भाषा की, बच्चे के साथ

प्रश्नकर्ता : आपने यह काउन्टरपुली लगाने की और ये सब जो बातें की हैं, वह तो टेक्निकल मेटर है।

दादाश्री : हाँ, टेक्निकल है।

प्रश्नकर्ता : पर उसमें तो अहंकार से पुली

लगती है लेकिन किसी व्यक्ति से बातें करने में वह इतना ज़्यादा मिकेनिकल हो जाता है कि उसकी जागृति चली जाती है।

दादाश्री : मनुष्य जाति तो बहुत समझदार जाति है। मनुष्य कोई बावली जाति नहीं है। लोग मनुष्य जाति पर खुद अज्ञान ओढ़ते हैं। वर्ना कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है। इतने छोटे चार साल के बच्चे से ऐसा कहते हैं कि, 'तू बेअक्ल है, मेरी बात नहीं समझता?' वहाँ कैसे बोलना चाहिए? इन बच्चों के साथ लोग तोतली भाषा में बोलते हैं। इन तीन-चार साल की उम्र के बच्चों के साथ बड़ी उम्र के बच्चों के जैसे नहीं बोल सकते। क्यों ऐसा नहीं बोल सकते?

प्रश्नकर्ता : उनसे उनकी भाषा में ही बात करनी चाहिए।

दादाश्री : खुद सब समझता है कि यह बालक है। उससे बाल भाषा में बात करना, वर्ना वह बेचारा नहीं समझेगा। उसे तो कहना चाहिए, 'देखो बेटा, यह खिलौना उसके जैसा है न? तूने वह देखा था न?' इस तरह दो-चार बार कहना चाहिए। तब वह कहेगा, 'हाँ'। तब आप समझना कि उसकी समझ में आ गया। अब, इसी प्रकार से उसके साथ आपको बात करनी चाहिए। आप समझना कि इसका दिमाग डल है यानी आप जानते हो कि बालक जैसी अवस्था है इसलिए 'बेटा, बेटा,' करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन बालक की अवस्था समझने के लिए चेतनता का उपयोग चाहिए।

दादाश्री : अरे, अज्ञान दशा में भी बालक के साथ उसकी माँ अच्छा व्यवहार करती है। बालक के साथ उसकी माँ अच्छा व्यवहार नहीं करती है? यह किसने सिखाया उन्हें?

प्रश्नकर्ता : वह तो कुदरती है।

दादाश्री : कुदरती नहीं है, ऐसी सारी जागृति हमारे अंदर है। लेकिन बड़ी उम्र का होता है तब फिर अहम् बहुत उत्पन्न हो जाता है। तब आपको ऐसा लगता है कि, यह तो बड़ा हो गया है। यह ऐसा क्यों कर रहा है? छोटों को ऐसा होता है, बड़ों को भी होता है? लेकिन बड़े को तू दूसरी भाषा में समझ कि यह बड़ा छोटे से भी नासमझ है बेचारा! यानी बड़ा डल लगे तब आप समझना कि तीन साल का बच्चा है। यानी उसके साथ आपको वैसा वर्तन करना चाहिए।

समानता का अधिकार देकर प्रकृति पहचानो

प्रश्नकर्ता : हमारी शादी के बाद हम दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को पहचानते हैं और लगता है कि पसंद करने में भूल हो गई है, दोनों के स्वभाव में कोई मेल नहीं है, तब दोनों का मेल कैसे और किस-किस तरह करें ताकि सुखी हो पाएँ?

दादाश्री : आप यह जो कहते हो न, उसमें एक भी वाक्य सही नहीं है। पहला वाक्य तो शादी के बाद दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को पहचानते हैं, लेकिन आप नाम मात्र भी नहीं पहचानते। यदि पहचान पाते, तो यह झूँझट ही नहीं होती। ज़रा-सा भी नहीं पहचानते।

मैंने तो एक बुद्धि के डिविज़िन से, सारा मतभेद बंद कर दिया था। लेकिन हीराबा की पहचान मुझे कब हुई? साठ साल के बाद हीराबा की पहचान हुई! पंद्रह साल का था तब शादी की थी, पैंतालीस साल तक उनका निरीक्षण करता रहा, तब मैंने उन्हें पहचाना कि ऐसे हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी ज्ञान होने के बाद पहचान में आए?

दादाश्री : हाँ, ज्ञान होने के बाद पहचान में आए। वर्ना पहचान ही नहीं पाते, मनुष्य पहचान ही नहीं पाता। मनुष्य अपने आपको पहचान नहीं पाता कि मैं कैसा हूँ! यानी यह वाक्य 'एक-दूसरे को पहचानते हैं', इन सब बातों में कोई दम नहीं है और पसंद करने में भूल नहीं हुई है।

प्रश्नकर्ता : हीराबा को कैसे पहचान पाए आप? ऐसा क्या किया कि जिससे पहचान हुई?

दादाश्री : प्रकृति कैसी है वह सब देखा। देखने का अभ्यास करने लगा, प्रकृति कैसी है वह और मनुष्य, जीवमात्र प्रकृति के अधीन है, स्वाधीन नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हीराबा की पहचान आपको साठवें साल में हुई थी?

दादाश्री : पहचान साठ साल में हुई, बड़ी मुश्किल से। फिर भी भीतर मतभेद हो जाते थे नहीं? उस दिन तो मतभेद हो गया था न?

यह ज्ञान हुआ था, फिर भी एक दिन मतभेद हो गया था। तब फिर दूसरे दिन जाकर कहा था, मैंने कहा, 'हाँ, भूल हो गई मेरी कल।' तब कहती है, 'नहीं, आपकी कैसी भूल?' पहचान हो जाए तो यह दखल ही नहीं है।

मित्र को अच्छे से पहचानते हैं। वह भी पूर्ण रूप से नहीं लेकिन कुछेक का उदय पहचानते हैं। मित्र को पहचानने का प्रयत्न किसलिए करते हैं कि, 'आपको बंधन नहीं है और वहाँ बंधन बाँधना है'। रियली स्पीकिंग बंधन नहीं है और प्रेम से बाँधना है न, इसलिए बारीकाई से उसे पहचानते रहते हैं और पत्नी को तो 'दे उल्टे हाथ की और कर दे सीधी', पहचानने का प्रयत्न ही नहीं करते।

प्रश्नकर्ता : यह समझाइए कि कैसे पहचानें? धीरे-धीरे सूक्ष्म रूप से पति अपनी पत्नी को प्रेम से कैसे पहचाने, वह समझाइए।

दादाश्री : पहचान कब होती है? एक तो समानता का दाँव देते हैं तब। उसे स्पेस देनी चाहिए। जैसे हम आमने-सामने चौपड़ खेलने बैठते हैं, उस समय समानता का दाँव होता है, तो खेल में मज़ा आता है। लेकिन यह तो समानता का दाँव देते हैं क्या? जबकि हम समानता का दाँव देते हैं।

प्रश्नकर्ता : कैसे देते हैं? प्रैक्टिकली (व्यवहारिक रूप से) कैसे देते हैं?

दादाश्री : मन से उन्हें अलग नहीं समझते। वे उल्टा-सीधा बोले फिर भी समान हैं इस तरह, यानी प्रेशर नहीं देते। यानी सामने वाले की प्रकृति को पहचान लेते हैं कि यह प्रकृति ऐसी है और वैसी है। फिर दूसरे तरीके ढूँढ निकालने हैं। मैं अन्य तरीके से काम नहीं लेता सभी लोगों से? मेरा कहा सभी करते हैं या नहीं करते? करते हैं क्योंकि यह कुशलता थी इसलिए नहीं, मैं अन्य तरीकों से काम लेता हूँ।

ज्ञान नहीं दिया हो, तो अन्य तरीके से काम नहीं ले सकते। आपको ज्ञान दिया है, इसलिए आप अन्य तरीके से काम ले सकते हो। जब अन्य तरीके से कहते हैं तो बहुत बदलाव होता है। ज्ञान लेने से पहले जिस तरह से कहते थे, यह ज्ञान लेने के बाद उसमें बदलाव करने को कहता हूँ।

प्रकृति का साइन्स समझकर हल लाएँ

एक भाई मुझे कहते थे कि, 'दादा, घर में मेरी पत्नी ऐसा करती है, वैसा करती है।'

तब मैंने उसे कहा कि, 'पत्नी से पूछेंगे तो वह क्या कहेगी, कि 'मेरा पति ऐसा बेकार है, बेअक्रल है।' अब इसमें सिर्फ आप न्याय क्यों खोजते हो? तब वे भाई कहते थे कि 'मेरा घर तो बिगड़ गया है। बच्चे बिगड़ गए हैं, पत्नी बिगड़ गई है।' मैंने कहा, 'कुछ नहीं बिगड़ा। आपको वह देखना नहीं आता। आपको अपना घर देखना आना चाहिए। हर एक की प्रकृति को पहचानना आना चाहिए।'

घर में एक व्यक्ति किच-किच करता हो तो वह तो उसका स्वभाव ही है। इसलिए आपको एक बार में समझ लेना चाहिए कि यह ऐसा है। क्या आप पहचान पाते हो कि 'यह ऐसा ही है?' फिर आगे उसमें कुछ जाँच करने की ज़रूरत है क्या? पहचान ने के बाद आपको जाँच करने की कोई ज़रूरत नहीं रहती। कुछ लोगों को रात को देर से सोने की आदत होती है और कुछ लोगों को जल्दी सोने की आदत होती है तो दोनों का मेल कैसे बैठेगा? और एक परिवार में सभी सदस्य साथ रहते हों, तो क्या हो सकता है? घर में एक व्यक्ति ऐसा कहने वाला निकले कि आप कमअक्रल हैं, तब आपको ऐसा समझ लेना चाहिए कि यह ऐसा ही कहेगा, इसलिए आपको एडजस्ट हो जाना चाहिए। इसके बजाय आप फिर से उसे जवाब दोगे तो आप थक जाओगे क्योंकि वह तो आप से टकराया। लेकिन आप टकराएँगे तो आपकी भी आँखें नहीं हैं ऐसा प्रमाणित हो जाएगा न? मैं यह साइन्स बताना चाहता हूँ कि प्रकृति का साइन्स जानो। बाकी, आत्मा तो अलग वस्तु है।

इस कलियुग में एक ही घर में अलग-अलग तरह के पौधे होते हैं। यानी घर बगीचे जैसा हो गया है लेकिन जिसे देखना नहीं आता

तो उसका क्या हो सकता है? उसे दुःख ही होगा न! और जगत् के पास यह देखने की दृष्टि नहीं है। बाकी, कोई खराब होता ही नहीं है। ये मतभेद तो खुद के अहंकार की वजह से हैं। जिन्हें देखना नहीं आता है, उनमें अहंकार है। मुझमें अहंकार नहीं है, इसलिए पूरी दुनिया में किसी से मेरा मतभेद ही नहीं होता है।

इस कलियुग में प्रकृति खेत जैसी नहीं है, बगीचे जैसी है। एक चंपा, एक गुलाब, मोगरा, चमेली ऐसा सब है। वे फूल सारे लड़ते हैं। एक कहेगा कि मेरा ऐसा है, तो दूसरा कहेगा कि मेरा ऐसा है। तब एक कहेगा कि 'तेरे काँटे हैं, जा, तेरे साथ कौन खड़ा रहेगा?' ऐसे झगड़े चलते रहते हैं। आपको समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी। इसीलिए कहते हैं कि अब तो जीवन में शांति का सरल मार्ग चाहिए।

दादाश्री : 'एडजस्ट एवरीव्हेर' इतना ही शब्द यदि आप जीवन में उतार लोगे तो बहुत हो गया। आपको अपने आप शांति प्राप्त होगी। शुरुआत में छः महीनों तक अड़चनें आएँगी, बाद में अपने आप ही शांति हो जाएगी। पहले छः महीनों तक पिछले रिएक्शन आएँगे, देर से शुरुआत करने की वजह से। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! यदि हर एक संयोग में एडजस्टमेन्ट लेना आ जाए तो आखिर में मोक्ष में पहुँच सकें, ऐसा ग़ज़ब का हथियार है।

संसार निभाए वे हैं सच्चे पति-पत्नी

एडजस्टमेन्ट तो, जो कोई तेरे साथ डिसएडजस्ट होने आए, उसके साथ तू एडजस्ट हो जा। दैनिक जीवन में यदि सास-बहू या देवरानी-जेठानी के बीच डिसएडजस्टमेन्ट होता हो, तो जिसे इन सांसारिक उलझनों से छूटना हो

उसे एडजस्ट हो जाना चाहिए। एडजस्ट होना, वही धर्म है। इस दुनिया में तो प्लस-माइनस का एडजस्टमेंट करना पड़ता है। माइनस हो वहाँ प्लस और प्लस हो वहाँ माइनस करना है। हम तो कोई हमारी समझदारी को भी पागलपन कहे तो हम कहते हैं, 'हाँ, ठीक है।' उसे तुरंत माइनस कर देते हैं।

पति किसे कहते हैं? संसार को निभाए उसे। पत्नी किसे कहते हैं? संसार को निभाए उसे। संसार को तोड़ डाले उसे पत्नी या पति कैसे कह सकते हैं? उसने तो अपने गुणधर्म ही खो दिए, ऐसा कहलाएगा न?

पति तो किसे कहते हैं? उसे देखते ही उसकी पत्नी की नम्रता कभी भी नहीं जाती, उसे पति कहते हैं। वहाँ प्रेम होता है! बाकी इसे पति कैसे कहेंगे? जैसे कुतिया, कुत्ते पर गुराती है न, वैसे गुराती रहती है। स्त्री का पति होना आया, ऐसा कब कहलाएगा, कि स्त्री निरंतर पूज्यता अनुभव करे! पति तो कैसा होना चाहिए? कभी भी स्त्री को और संतानों को परेशानी नहीं होने दे, ऐसा हो। स्त्री कैसी हो? कभी भी पति को परेशानी नहीं होने दे, उसी के विचारों में जीवन जीती हो। (उसके) मन में ऐसा लगे कि ओहोहो! ये देवता जैसे व्यक्ति हैं!

प्रेम-मित्रता से निभाएँ जीवन

अभी कोई पत्नी अपने पति को दुःख देती हो, तो वह पूर्वजन्म के बैर का बदला ले रही है। यह सब बैर से ही बंधा हुआ है, प्रेम से नहीं। प्रेम तो मतभेद होने ही नहीं देता! उसीको लाइफ (जीवन) कहते हैं! इसलिए उसे प्रेम दिखाओ। वह उल्टी-सीधी हो न, फिर भी तुम प्रेम दिखाओ। तो एक दिन वह प्रेम से वश हो

जाए, ऐसी चीज़ है। स्त्री जाति प्रेम से वश हो जाए, ऐसी है। बाकी अन्य किसी तरीके से वश नहीं हो सकती। उस बेचारी को कुछ भी नहीं चाहिए, वह सिर्फ प्रेम माँगती है। तो क्या वह प्रेम नहीं माँगगी? माँ-बाप को छोड़कर यहाँ आती है तो क्या प्रेम नहीं माँगगी? अतः फ्रेन्ड (मित्र) की तरह रहना चाहिए। जैसे फ्रेन्ड हों न, उस तरह जीवन जीना चाहिए। प्रेम से! पति तो नहीं बन जाना चाहिए न?

'मिनट' के लिए भी झंझट नहीं हो, उसे पति कहते हैं। जैसे मित्र के साथ बिगड़ने नहीं देते, उस प्रकार सँभालना। यदि मित्र के साथ नहीं सँभालते तो मित्रता टूट जाती है। मित्राचार यानी मित्राचार। उन्हें शर्त बता देना कि मित्राचारी में, यदि तू आउट ऑफ मित्राचार हो गई तो गुनाह लगेगा। मिल-जुलकर मित्राचारी रख।'

शादी की, वह समाज के डर की वजह से शादी की, ताकि हमें डर रहे कि अब भाग नहीं सकते। आज झगड़ा करके भाग जाए तो लोग क्या कहेंगे? इसलिए शादी करनी है। उसके बाद मित्राचार करना है। मित्राचार में कितना अच्छा संबंध रखते हैं? फ्रेन्ड के प्रति सिन्सियर रहता है, इतना कि फ्रेन्ड दूर रहकर भी कहता है कि 'मेरा फ्रेन्ड ऐसा है! मेरे बारे में कभी बुरा सोचता ही नहीं।' उसी प्रकार पत्नी के लिए भी बुरा नहीं सोचना चाहिए। क्या वह फ्रेन्ड से बढ़कर नहीं है?

प्रश्नकर्ता : है सही बात है।

दादाश्री : आपको तो अब समभाव से निकाल करना है। घर में वाइफ के साथ फ्रेन्ड की तरह रहना है। वे आपकी फ्रेन्ड और आप उनके फ्रेन्ड! दो मित्र सभी तरह से सावधानीपूर्वक

रहते हैं, तो यह तो मित्र से भी बढ़कर है। यह तो पति! दो मित्र नियम में रहते हैं, सावधानीपूर्वक मित्राचार निभाते हैं और मित्रों में यदि ऐसा कलह हो जाए तो मित्र छूट जाते हैं लेकिन यह पत्नी तो नहीं छूटती, वह कैसे छूटेगी? सामाजिक बंधन है, कहाँ जाएगी? इसलिए फिर मार खाती हैं, गालियाँ खाती हैं, सुनती हैं और फिर स्त्रियाँ (पत्नी) भी विरोधी हो जाती हैं।

लड़ें-झगड़ें फिर भी प्रतिक्रमण से छूटेंगे

एक भाई तो कहते थे। मुझसे कहते थे, वाइफ के साथ सात घंटे तक मेरा वाकयुद्ध चला। सुबह से चला, लड़ाई हुई, वह सात घंटे तक चली परंतु मुँह से वाकयुद्ध, उसके बाद अंतिम आठवें घंटों में कायायुद्ध शुरू हो गया। उसने मेरे बाल पकड़े और मैं भी मारने लगा। उतने में वह भी बाल खींचकर परेशान करने लगी। क्या कहते थे? पूरा एक घंटा कायायुद्ध चला! आठ घंटे इसमें गए और नौवें घंटों में तो हम दोनों साथ में चाय पी रहे थे, कहते थे। कहते थे, अक्रम विज्ञान को भी धन्य है!

प्रश्नकर्ता : आठ घंटे तक अक्रम विज्ञान कहाँ गया था? नौवें घंटे में कहाँ से आ गया?

दादाश्री : नहीं, अक्रम विज्ञान भीतर था ही। लेकिन यह भूमिका निभानी थी न, उसकी तो पूरी फिल्म थी।

प्रश्नकर्ता : पूरी फिल्म बन चुकी थी।

दादाश्री : जो फिल्म बन चुकी थी वही भूमिका निभाई। उसके बाद अक्रम विज्ञान हाज़िर हुआ। फिल्म की भूमिका निभाई तो अक्रम विज्ञान वापस तैयार हुआ, फिर नौवें घंटे में साथ में चाय पी और बोलने लगे, 'दादा भगवान के असीम

जय जयकार हों' बोलो, आमने-सामने माफी माँगी ली!

संसार व्यवहार निभाते हुए निरंतर समाधान में रह सकें, ऐसा यह ज्ञान है। निरंतर समाधि में रह सकें, ऐसा यह ज्ञान है। इसलिए फिर अपने में कलुषित भाव रहता ही नहीं परंतु अपनी वजह से दूसरों को भी क्लेश नहीं होता। फिर वे चिढ़ रहे हों तब भी शांत हो जाते हैं। क्योंकि जैसे रास्ते में हमें ठोकर लगी, तो हम उस पर चिढ़ते हैं लेकिन वह ठोकर तो शांत ही रहती है न! और यदि वह चिढ़ेगी तो हम उस पर ज्यादा चिढ़ेंगे परंतु हम शांत हो जाएँ, तो वह नहीं चिढ़ेगी। ठोकर जैसा, दीवार जैसा हो जाना है। ये सभी इसी तरह समभाव से *निकाल* करते हैं। पहले इनका भी सभी का झगड़ा होता था लेकिन अभी झगड़ा नहीं होता, बल्कि दोनों एक दूसरे के साथ होते हैं।

प्रश्नकर्ता : कुछ लोग स्त्री से ऊबकर घर से भाग जाते हैं, वह कैसा है?

दादाश्री : नहीं, भगोड़े क्यों बनना है? आप परमात्मा हैं। आपको भगोड़ा बनने की क्या ज़रूरत है? आपको उसका समभाव से *निकाल* कर देना है।

प्रश्नकर्ता : *निकाल* करना है, तो किस तरह से होगा? मन में ऐसा भाव करना है कि यह पूर्व का आया है?

दादाश्री : इतने से *निकाल* नहीं होता। *निकाल* यानी तो सामने वाले को फोन करना पड़ता है, उसके आत्मा को सूचित करना पड़ता है। उस आत्मा के पास, हमने भूल की है ऐसा कबूल-एक्सेप्ट करना पड़ता है। यानी बड़ा प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : सामने वाला व्यक्ति अपना अपमान करे तब भी हमें उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए?

दादाश्री : अपमान करे तो ही प्रतिक्रमण करना है, आपको मान दे तब नहीं करना है। प्रतिक्रमण करोगे तो सामने वाले पर द्वेषभाव तो होगा ही नहीं। ऊपर से उस पर अच्छा असर पड़ेगा। आपके साथ द्वेषभाव नहीं होगा, वह तो समझो कि पहला स्टेप है, लेकिन फिर उसे खबर भी पहुँचती है।

प्रश्नकर्ता : उसके आत्मा तक पहुँचेगा?

दादाश्री : हाँ, जरूर पहुँचेगा। फिर उसका आत्मा उसके पुद्गल को भी कहेगा कि, 'भाई, फोन आया तेरा।' यह जो अपना प्रतिक्रमण है, वह अतिक्रमण के लिए है, क्रमण के लिए नहीं।

प्रश्नकर्ता : पूर्व जन्म के ऋणानुबंध में से मुक्त होने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपका जिनके साथ पूर्व जन्म का ऋणानुबंधन हो और आपको वह पसंद ही नहीं हो, उसका सहवास पसंद ही नहीं हो, फिर भी अनिवार्य रूप से उसके सहवास में रहना ही पड़े, तो क्या करना चाहिए? उसके साथ बाहर का व्यवहार जरूर रखना चाहिए, मगर भीतर उसके नाम के प्रतिक्रमण करने चाहिए। क्योंकि आपने पिछले जन्म में अतिक्रमण किया था, उसका यह परिणाम है। क्या काँजेज किए थे? तो कहते हैं, उसके साथ अतिक्रमण किया था पूर्व जन्म में, उसका इस जन्म में फल आया, अतः उसका प्रतिक्रमण करोगे, तो वह (प्लस-माइनस होकर) खत्म हो जाएगा। अतः भीतर उससे आप माफी माँग लो। माफी माँगते रहो कि मैंने जो दोष किए हैं, उनकी माफी माँगता हूँ। किसी भी भगवान

को साक्षी रखकर माफी माँग लो, तो सब खत्म हो जाएगा। वर्ना फिर क्या होता है कि उसे ज्यादा दोषित देखने से, किसी पुरुष को स्त्री बहुत दोषित देखती रहे तो तिरस्कार बढ़ता है और तिरस्कार होने से भय लगता है। आपको जिसके प्रति तिरस्कार होगा, उससे भय लगेगा आपको। उसे देखते ही आपको घबराहट होगी, इससे समझ लेना कि यह तिरस्कार है। अतः तिरस्कार छोड़ने के लिए आप भीतर माफी माँगते रहो। दो ही दिनों में वह तिरस्कार बंद हो जाएगा। उसे पता नहीं चलेगा, आप भीतर माफी माँगते रहो उसके नाम की, उसके प्रति जो भी दोष किए हैं, 'हे भगवान, मैं उनके लिए क्षमा माँगता हूँ। यह मेरे ही दोष का परिणाम है।' किसी भी मनुष्य के प्रति जो भी दोष किए हैं, उसके भीतर वाले भगवान से आप माफी माँगते रहो तो सब धुल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : बहुत प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे?

दादाश्री : जितनी स्पीड में आपको मकान बनाना हो उतने कारीगर आप बढ़ाना। ऐसा है न, कि इन बाहर के लोगों के लिए आप प्रतिक्रमण नहीं होंगे तो चलेगा, लेकिन अपने आसपास के और नजदीक के, घर के जो लोग हैं, उनके प्रतिक्रमण अधिक करने हैं। घर वालों के लिए मन में भाव रखना है कि 'मेरे साथ जन्म लिया है, साथ में रहते हैं तो किसी दिन ये मोक्षमार्ग पर आएँ।'

पति-पत्नी में भी यदि कोई एक दरार डाले, तो दूसरे को जोड़ लेना चाहिए, तभी संबंध निभेगा और शांति रहेगी। यह अक्रम विज्ञान तो देखो! वाइफ के साथ झगड़े नहीं, लेकिन पूरे जगत् के साथ झगड़े बंद हो जाएँ। यह विज्ञान ही ऐसा है और झगड़े बंद हुए यानी मुक्त हो गए।

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

छत्तीसगढ़

रायपुर	दिनांक : 4 अप्रैल	संपर्क : 9179025061
भिलाई	दिनांक : 5 अप्रैल	संपर्क : 9407982704
सूरजपुर	दिनांक : 7 अप्रैल	संपर्क : 9165606166
बिलासपुर	दिनांक : 8 अप्रैल	संपर्क : 9425530470
रायगढ़	दिनांक : 9 अप्रैल	संपर्क : 8435359972

उड़ीसा

बरगड्	दिनांक : 10 अप्रैल	संपर्क : 9650500065
भुवनेश्वर	दिनांक : 13 अप्रैल	संपर्क : 7077902158
कटक	दिनांक : 14 अप्रैल	संपर्क : 8763090042

पश्चिम बंगाल

कोलकाता	दिनांक : 11-12 अप्रैल	संपर्क : 9830080820
---------	-----------------------	---------------------

बिहार

मुजफ्फरपुर	दिनांक : 7 अप्रैल	संपर्क : 7903092322
छपरा मेघ	दिनांक : 8 अप्रैल	संपर्क : 9608030142
बेतिया	दिनांक : 9 अप्रैल	संपर्क : 8130952631
पटना	दिनांक : 12 अप्रैल	संपर्क : 9431015601
आरा	दिनांक : 14 अप्रैल	संपर्क : 7091140139
बासन बिधा	दिनांक : 15 अप्रैल	संपर्क : 9693786691
बख्तियारपुर	दिनांक : 16 अप्रैल	संपर्क : 6200592949
नवादा	दिनांक : 17 अप्रैल	संपर्क : 9304665439

उत्तर प्रदेश

झाँसी	दिनांक : 13 अप्रैल	संपर्क : 9415588788
कानपुर	दिनांक : 23 अप्रैल	संपर्क : 9452525981
लखनऊ	दिनांक : 24 अप्रैल	संपर्क : 8885825819
प्रयागराज	दिनांक : 25 अप्रैल	संपर्क : 8840106094
वाराणसी	दिनांक : 26 अप्रैल	संपर्क : 9795228541
बदलापुर	दिनांक : 27 अप्रैल	संपर्क : 9236518934

ग्वालियर	दिनांक : 12 अप्रैल	संपर्क : 9926265406
जबलपुर	दिनांक : 14-15 अप्रैल	संपर्क : 9425160428
भोपाल	दिनांक : 16-17 अप्रैल	संपर्क : 9755115300
इन्दौर	दिनांक : 18-19 अप्रैल	संपर्क : 9644544455
लिंगवा	दिनांक : 20 अप्रैल	संपर्क : 9926575223, 9617153253
खरगोन	दिनांक : 21 अप्रैल	संपर्क : 9425643302

समय और स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में टी.वी. चैनल पर...

- ✦ 'साधना' पर हर रोज सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह 7 से 7-45 (मराठीमें)
- ✦ 'आस्था कन्नड़ा' पर हर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ामें)
- ✦ 'दूरदर्शन चंदना' पर हर रोज शाम 7 से 7-30 (कन्नड़ामें)
- ✦ 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- ✦ 'वालम' पर हर रोज शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

- Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
- Periodicity of Publication :** Monthly
- Name of Printer :** Amba Multiprint, **Nationality :** Indian,
Address : Opp. H B Kapadiya New High School, At- Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar-382729.
- Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
- Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above. (As per No.4)
- Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
Address : same as above. (As per No.4)

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2026

sd/-

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

Atmagnani Pujya Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule - 2026

Date	Day	From	to	Event	Venue
25-Mar-26	Wed	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Ramgarhia Community Centre, Ulverscroft Road, Leicester , LE4 6BY
26-Mar-26	Thu	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	
27-Mar-26	Fri	7:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
28-Mar-26	Wed	All Days		Satasang - GNAN VIDHI	Scotland - Glasgow (For UK Mahatmas Only)
01-Apr-26	Sun			Prior Registration Required	
03-Apr-26	Fri	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, Harrow , HA3 5BD.
04-Apr-26	Sat	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
04-Apr-26		7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	
05-Apr-26	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
05-Apr-26		4:30 PM	7:30 PM	GNAN VIDHI	
06-Apr-26	Mon	7:30 AM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	
08-Apr-26	Wed	All Days		UK Shibir	Weston-Super-Mare
12-Apr-26	Sun			Prior Registration Required	
17-Apr-26	Fri	All Days		Akram Vignan Event	Willingen - Germany
21-Apr-26	Tue			Prior Registration Required	

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

2 मई (शनि) शाम 5 से 7 - सत्संग और 3 मई (रवि) शाम 4 से 7-30 - ज्ञानविधि

20 से 24 मई (बुध से रवि) (PMHT पेरेंट्स महात्मा) - सत्संग शिविर

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

अडालज में हिन्दी राष्ट्रीय शिविर - वर्ष 2026

3 से 7 जून - सत्संग और - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज: 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901,
अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557,
गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687, भावनगर : 9313882288, अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445,
वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

फैमिली लाइफ कैसी होनी चाहिए ?

जीवन जीना अच्छा कब लगता है, जब सारा दिन *उपाधि* (परेशानी) नहीं हो। शांति से दिन व्यतीत हों। यह तो घर में क्लेश होता रहता है, तब जीवन जीना कैसे अच्छा लगेगा ? यह तो पुसाएगा ही नहीं न! घर में क्लेश नहीं होना चाहिए। शायद कभी पड़ोसी के साथ हो या बाहर के लोगों के साथ हो, पर घर में भी ? घर में फैमिली की तरह लाइफ जीनी चाहिए। फैमिली लाइफ कैसी होती है ? घर में प्रेम, प्रेम और प्रेम ही छलकता रहें। यह तो फैमिली लाइफ ही कहाँ है ? दाल में नमक ज्यादा हो जाए तो क्लेश कर डालता है। अन्डर डेवलपड लोग ! डेवलपड कैसे होते हैं कि दाल में नमक ज्यादा हो जाए, तो उसे एक ओर रखकर बाकी सब खा लेते हैं। दाल एक ओर रखकर दूसरा सब नहीं खा सकते ? माय फैमिली का अर्थ क्या है ? झंझट नहीं किसी भी तरह की। खुद की फैमिली में एडजस्ट होना आना चाहिए। एडजस्ट एवरीव्हेर !

- दादाश्री

